Semester – IV: THEORY

Common Paper Name

Paper - Family & Community

Unit 1: Understanding Family (परिवार को समझना)

Unit :– 1.1 Family; meaning, definition and characteristics & Families in the Indian context (परिवार; अर्थ, परिभाषा और विशेषताएं – भारतीय में परिवार संदर्भ)

परिवार का अर्थ – परिवार शब्द अंग्रेजी के '**Family**' शब्द का रूपांतर है जो कि लैटिन भाषा के '**Famulus**' शब्द से निकला है परिवार शब्द का सदैव एक–सा अर्थ नहीं लगाया गया है। वास्तविक लैटिन शब्द 'Familias' के अंतर्गत माता–पिता, बच्चे, नौकर और गुलाम भी सम्मिलित किए जाते थे। ग्रीक लोग परिवार के लिए 'Oikonomia' शब्द का प्रयोग किया करते थे जिसका अभिप्राय उपर्युक्त समूह से भी बड़े समूह से हुआ करता था। सामान्य रूप से परिवार में माता–पिता एवं उनके बच्चों को सम्मिलित किया जता है। जहां पति पत्नी के रूप में विवाहित लोग यौन संबंधों से संतान उत्पन्न करते हैं और उनका पालन पोषण करते हैं वही परिवार कहलाता है।

परिवार की परिभाषा – आगबर्न तथा निमकॉफ–''परिवार पति–पत्नी का बच्चों–सहित अथवा थोड़ा–बहुत स्थाई संघ है अथवा एक स्त्री या पुरुष का अकेले ही बच्चों के साथ वाला संघ है।'

सर्वश्री मेकाइवर और पेज – ''परिवार उस समूह को कहते है जो यौन संबंधों पर आधारित है और जो इतना छोटा व स्थायी है कि उसमें बच्चों की उत्पत्ति एवं पालन–पोषण हो सके।''

परिवार की विशेषताएं – Family Characteristics

1. **सार्वभौमिकता** – परिवार नाम की संस्था सर्वभौमिक है। यह समिति के रूप में प्रत्येक सामाजिक संगठन में पाई जाती है। या संस्था प्रत्येक समाज चाहे वह किसी भी सामाजिक विकास की अवस्था में हो, पाई जाती रही है। प्रत्येक मनुष्य परिवार का सदस्य रहता है, और उसे भविष्य में भी रहना पड़ेगा। परिवार संगठन केवल मनुष्य में ही नहीं अपितु पशुओं की अनेक जातियों में भी पाया जाता है।

2. **भावात्मक आधार** – यह समिति मानव की अनेक स्वाभाविक मूल प्रवृत्तियों पर आधारित है। परिवार की सदस्यता भावना से परिपूर्ण है। माता का प्रेम उसे बच्चों के लिए सब कुछ त्याग करने के लिए प्रेरित करता है। यह सब संवेदनात्मक भावना के कारण ही है। माता और पिता में संतान की कामना की मूल प्रवृत्ति पाई जाती है। इस मूल प्रवृत्ति के साथ–साथ उनके प्रति वात्सल्य भी पाया जाता है। परिवार को बनाए रखने में इनका महत्वपूर्ण भाग है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

3. सीमित आकार – परिवार का आकार सीमित होता है। उसके सीमित होने का प्रमुख कारण प्राणी शास्त्रीय दशाएं हैं। इनका सदस्य वही व्यक्ति हो सकता है जो परिवार में पैदा हुआ हो या विवाद या गोद लेने से उन में सम्मिलित हुआ हो। सामाजिक संगठन में तथा औपचारिक संगठन में परिवार सबसे छोटी इकाई है। विशेषता आधुनिक युग में इसका आकार सीमित हो गया है। क्योंकि अब परिवार रक्त समूह से बिल्कुल अलग कर दिया गया है। आजकल पति पत्नी और बच्चे ही इसके सदस्य होते हैं।

4. सामाजिक ढांचे केंद्रीय स्थिति – परिवार सामाजिक ढांचे में केंद्रीय स्थिति में है। यह सामाजिक संगठन की प्रमुख इकाई है। संपूर्ण सामाजिक ढांचा परिवार पर आधारित है। परिवार से अन्य सामाजिक संगठनों का विकास होता है।

5. सामाजिकरण की संस्था – परिवार का रचनात्मक प्रभाव भी होता है। मनुष्य का या प्रथम सामाजिक पर्यावरण है। सर्वप्रथम मनुष्य इसी समिति में अपना सामाजिकरण करता है। मनुष्य पर जो संस्कार बचपन में पड़ जाते हैं वह अमिट रहते हैं। इन्हीं संस्कारों पर मनुष्य के व्यक्तित्व की रचना होती है।

6. सदस्यों का उत्तरदायित्व – परिवार में सदस्यों का उत्तरदायित्व सबसे ज्यादा होता है। परिवार एक प्राथमिक समूह है। प्राथमिक समूह के संबंध में कहा जा सकता है कि इनमें उत्तरदायित्व असीमित रहता है। परिवार के लिए मनुष्य हमेशा कार्य करता रहता है। वह इतना व्यस्त रहता है कि परिवार ही उसके लिए सब कुछ हो जाता है। परिवार में स्त्रियां और पुरुष दोनों ही कठिन परिश्रम करते हैं। परिवार के प्रति उत्तरदायित्व की भावना मनुष्य स्वभाव में ही पाई जाती है।

7. सामाजिक नियंत्रण – परिवार द्वारा सामाजिक नियंत्रण होता है। मनुष्य को यह नियम सिखाता है कि परिवार के अस्त्र जनवरी दिया प्रथाएं समाज निषेध और विधियां हैं। विवाह द्वारा निश्चित नियम बना दिए जाते हैं। दो भागीदार इन नियमों में कोई भी परिवर्तन नहीं कर सकते हैं। आधुनिक युग में कोई भी स्त्री या पुरुष अपनी इच्छा से विभाग द्वारा गठबंधन कर सकते हैं। अपनी इच्छा से एक दूसरे को नहीं छोड़ सकते। प्राचीन काल में तो यह नियम और भी कठोर थे। परिवार का नियंत्रण मुख्यता प्रेम एवं भावना पर आधारित था।

8. स्थाई एवं अस्थाई प्रकृति – परिवार समिति के रूप में अस्थाई हैं। दो पति पत्नी मिलकर एक समिति का निर्माण करते हैं। पति–पत्नी दोनों में से किसी के भी मर जाने पर यह समिति समाप्त हो जाती है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो परिवार अस्थाई हैं। परंतु परिवार के संस्था के रूप में देखा जाए तो यह स्थाई हैं। परिवार संस्था के रूप में सदैव जीवित रहता है। केवल कार्य करने वाले व्यक्ति परिवर्तित होते रहते हैं।

भारत में परिवार सबसे महत्वपूर्ण संस्था है जो सदियों से जीवित है। भारत, अन्य कम औद्योगीकृत, पारंपरिक, पूर्वी समाजों की तरह एक सामूहिक समाज है जो परिवार की अखंडता, परिवार की वफादारी और पारिवारिक एकता पर जोर देता है। सी. हैरी हुई और हैरी सी. ट्रायंडिस (1986) ने सामूहिकता को परिभाषित किया, जो व्यक्तिवाद के विपरीत है, ''सद्भाव की भावना, अन्योन्याश्रितता और दूसरों के लिए चिंता''। अधिक विशेष रूप से, सामूहिकता परिवार के सदस्यों के साथ सहयोग करने के लिए अधिक तत्परता और जीवन के अधिकांश पहलुओं को प्रभावित करने वाले निर्णयों पर विस्तारित रिश्तेदारों में परिलक्षित होती है, जिसमें करियर विकल्प, साथी चयन और विवाह शामिल हैं।

भारतीय परिवार व्यक्ति के जीवन में और समुदाय के जीवन में एक प्रमुख संस्था रही है (मुल्लट्टी 1992)। हिंदू परिवार के लिए, विस्तारित परिवार और रिश्तेदारी संबंधों का अत्यधिक महत्व है। भारत में, परिवार

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

पितृसत्तात्मक विचारधारा का पालन करते हैं, वंश के पितृवंशीय शासन का पालन करते हैं, पितृसत्तात्मक होते हैं, पारिवारिक मूल्य अभिविन्यास रखते हैं, और पारंपरिक लिंग भूमिका प्राथमिकताओं का समर्थन करते हैं। भारतीय परिवार को मजबूत माना जाता है। स्थिर , निकट , लचीला , और स्थायी ऐतिहासिक रूप से, भारत में पारंपरिक, आदर्श और वांछित परिवार संयुक्त परिवार है। एक संयुक्त परिवार में रिश्तेदार शामिल होते हैं, और आम तौर पर एक ही घर में रहने वाले चाचा, चाची, भतीजी, भतीजे और दादा–दादी सहित तीन से चार जीवित पीढ़ियां शामिल होती हैं। यह एक ही घर के अलग–अलग कमरों में रहने वाली कई पारिवारिक इकाइयों से बना एक समूह है। ये सदस्य एक ही चूल्हे पर पका हुआ खाना खाते हैं, एक सामान्य आय साझा करते हैं, सामान्य संपत्ति साझा करते हैं, रिश्तेदारी के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े होते हैं, और एक ही मूर्तियों की पूजा करते हैं। परिवार पुराने का समर्थन करता है। विधवाओं, अविवाहित वयस्कों और विकलांगों की देखभाल करता हैय बेरोजगारी की अवधि के दौरान सहायता करता है। और सुरक्षा और समर्थन और एकजुटता की भावना प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार हमेशा से पसंदीदा परिवार रहा है और अधिकांश भारतीयों ने अपने जीवन के किसी न किसी मोड़ पर संयुक्त परिवार में भाग लिया है।

Unit :– 1.2 Structure, types of families and its impact on children's development - (परिवारों की संरचना, प्रकार और बच्चों के विकास पर इसका प्रभाव।) :–

परिवार के प्रकार | Family Type

1.सत्ता के आधार पर –

पितृसत्तात्मक परिवार – जिन परिवारों में परिवारिक सत्ता पिता के हाथ में होती है तथा पिता परिवार का कर्ता होता है और संपूर्ण अधिकार पिता के हाथ में निहित होती है तो ऐसे परिवार को पितृसत्तात्मक परिवार कहते हैं भारत के हिंदू परिवार इसी प्रकार के होते हैं।

मातृसत्तात्मक परिवार – जिन परिवारों में परिवारिक सत्ता अधिकार माता या स्त्री वर्ग के हाथ में होते हैं तथा परिवार की करता पुरुष के स्थान पर स्त्री होती है उन परिवारों को मातृसत्तात्मक परिवार कहा जाता है। इस प्रकार के परिवार भारत की आदिवासी जनजातियों में पाई जाती है।

2. वंश के आधार पर –

मातृवंशी परिवार – जिन परिवारों में वंश का नाम तथा वंश परिचय माता के परिवार के आधार पर निर्धारित होता है उन परिवारों को मात्र वंशीय परिवार कहते हैं।

पितृवंशीय परिवार – जिन परिवारों में बच्चों के वंशनाम तथा वंश का परिचय पिता के आधार पर निर्धारित होता है उन्हें पितृ वंशीय परिवार कहते हैं।

उभयवाही परिवार – जिन परिवारों में मात्र तथा पुत्र वंश को छोड़कर अन्य किसी निकट के संबंधियों के वंश नाम तथा वंश परिचय निर्धारित होता है उन्हें उभयवाही परिवार कहते हैं।

द्विनामी परिवार – जिन परिवारों में माता और पिता दोनों ही के परिवार के आधार पर वंश नाम तथा बच्चों का वंश परंपरागत रूप से चलता है ऐसे परिवार को द्विनामी परिवार कहते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

3. स्थान के आधार पर –

पितृ स्थानीय परिवार – जिन परिवारों में विवाह के पश्चात नई वधू अपने ससुराल अथर्व पति के घर आकर निवास करती है ऐसे परिवारों को पितृ स्थानीय परिवार कहते हैं।

मातृ स्थानीय परिवार – जिन परिवारों में लड़के विवाह के पश्चात अपनी वधु के साथ हुआ उसके घर में निवास करने लगते हैं ऐसे परिवारों को मातृ स्थानीय परिवार कहते हैं। जिन्हें हम साधारण भाषा में जमाई कहते हैं।

नव स्थानीय परिवार – इस प्रकार के वे परिवार होते हैं जो नव दंपत्ति द्वारा बनाए जाते हैं। कुछ लोगों में विवाह के पश्चात ना तो लड़का पिता के घर और ना ही पति के घर में निवास करता है बल्कि पति पत्नी दोनों किसी नए मकान में रहते हैं तो ऐसे परिवारों को नव स्थानीय परिवार कहा जाता है।

4. विवाह के आधार पर

एक विवाह परिवार – जब पुरुष एक विवाह करके परिवार बस आता है तो ऐसे परिवार को एक विवाही परिवार कहा जाता है।

बहु विवाह परिवार – इस प्रकार के वे परिवार होते हैं जिनमें पुरुष एक से अधिक पत्नी रखता है। मुसलमान जनजातियों में इस तरह के विवाह देखे जाते हैं

बहु पती विवाह – जब एक स्त्री अनेक पुरुषों के साथ वैवाहिक संबंध रखकर परिवार बसाती है तो ऐसे परिवार को बहू विवाही परिवार कहते हैं।

बहु पत्नी विवाह – जब एक पुरुष एक से अधिक पत्नियों से विवाह करता है तो ऐसे परिवार को बहू विवाही परिवार कहा जाता है।

5. सदस्यों की संख्या के आधार पर

एकाकी परिवार – यह परिवार का अति लघु रूप होता है जिनकी सदस्य संख्या बहुत कम होती है इन परिवारों में पति पत्नी तथा उनके बच्चे एक साथ निवास करते हैं। एसे परिवार को एकाकी परिवार कहते हैं।

संयुक्त परिवार – संयुक्त परिवार व परिवार होते हैं जिनमें सदस्यों की संख्या बहुत ज्यादा होती है इनमें तीन पीढ़ी तक के सदस्य एक साथ निवास करते हैं इन्हें संयुक्त परिवार कहते हैं संयुक्त परिवार के अंतर्गत यह तीन पीढ़ी तक के लोग रहते हैंकृ

1. **वृहत परिवार** – यह परिवार जिनमें तीन पीढ़ी तक के सदस्य तथा अन्य रक्त संबंधी एक साथ निवास करते हैं तथा जिन की सदस्य संख्या 10 से लेकर 50 तक होती है।
2. **बड़ा परिवार** – यह परिवार जिन की सदस्य संख्या 5 से लेकर 15 सदस्य तक होती है जिनमें माता–पिता तथा उनके विवाहित और अविवाहित बच्चे निवास करते हैं ऐसे परिवार को विशाल परिवार कहते हैं।
3. **छोटा परिवार** – यह परिवार जिनमें मात्र पति पत्नी तथा उनके बच्चे एक साथ रहते हैं जिनकी संख्या 5, 6 तक होती है ऐसे परिवार को लघू परिवार या छोटा परिवार कहते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

बालक के विकास में परिवार के योगदान एवं उत्तरदायित्व – मांटेसरी (Montessori) ने बालकों के विकास के लिए परिवार के वातावरण तथा परिस्थिति को महत्वपूर्ण माना है। इसीलिए उन्होंने विद्यालय को बचपन का घर (House of childhood) कहा है।

रेमंट के अनुसार – "घर ही वह स्थान है जहां वे महान गुण उत्पन्न होते हैं जिन की सामान्य विशेषता सहानुभूति है।" घर में घनिष्ठ प्रेम की भावनाओं का विकास होता है। यही बालक उदारता –अनुदारता, निस्वार्थ और स्वार्थ, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य, परिश्रम और आलस्य में अंतर सीखता है।"

बालक के जीवन पर घर का प्रभाव इस प्रकार पड़ता है :–

- घर बालक की प्रथम पाठशाला है। वह घर में सभी गुण सकता है। जिसकी पाठशाला में आवश्यकता होती है।
- बालकों को घर पर नैतिकता एवं सामाजिकता का प्रशिक्षण मिलता है।
- सामाजिक तथा अनुकूलन के गुण विकसित करता है।
- सामाजिक व्यवहार अनुकरण करता है।
- सामाजिक,नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने में घर का योगदान मुख्य है।
- उत्तम आदतों एवं चरित्र के विकास में योग देता है।
- रुचि अभिरुचि तथा प्रवृत्तियों का विकास होता है।
- बालक की व्यक्तिता का विकास होता है।
- प्रेम की शिक्षा मिलती है।
- सहयोग, परोपकार, सहिष्णुता, कर्तव्य पालन के गुण विकसित होते हैं।

Unit :– 1.3 Family culture and practices – its influence on children's mental and physical wellbeing- (पारिवारिक संस्कृति और प्रथाएं और बच्चों के मानसिक और शारीरिक कल्याण पर इसका प्रभाव) – सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बच्चों को यह एहसास दिलाती है कि वे कौन हैं। भोजन, कलात्मक अभिव्यक्ति, भाषा और धर्म के आसपास के रीति–रिवाजों और विश्वासों सहित, बच्चे जन्म से ही अद्वितीय सांस्कृतिक प्रभावों का जवाब देते हैं, जिस तरह से वे भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक और भाषाई रूप से विकसित होते हैं।

जब एक बच्चे की आत्म–पहचान सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण सामाजिक वातावरण के साथ विपरीत होती है, तो यह सीखने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। सौभाग्य से, सांस्कृतिक रूप से सक्षम शिक्षक सभी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों को विविध संस्कृतियों की समझ और स्वीकृति दिखा कर सीखने में मदद करते हैं और कैसे वे प्रत्येक बच्चे को विशिष्ट रूप से मूल्यवान बनाते हैं। क्योंकि संस्कृति एक बच्चे के भविष्य की भलाई का इतना शक्तिशाली संकेतक है, जो बच्चों के साथ काम करते हैं, जिसमें सामाजिक कार्यकर्ता, परामर्शदाता और विशेषज्ञ शामिल हैं, उन्हें बाल विकास पर सांस्कृतिक प्रभावों को समझने की जरूरत है और वे लोगों के बढ़ने और सीखने के तरीके को कैसे प्रभावित करते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

संस्कृति हमारे जन्म के क्षण से ही विकास को प्रभावित करती है, जैसे–जैसे हम बढ़ते हैं, वैसे–वैसे हम पर प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, संस्कृति प्रभावित कर सकती है कि बच्चे कैसे मूल्यों, भाषा, विश्वास प्रणाली, और स्वयं को व्यक्तियों और समाज के सदस्यों के रूप में समझते हैं। बच्चे इन सांस्कृतिक प्रभावों को विभिन्न तरीकों से प्राप्त कर सकते हैं, जैसे कि उनके माता–पिता, उनके पर्यावरण और मीडिया के माध्यम से। समाज विविध संस्कृतियों की समझ कैसे दिखाता है, यह कई तरह से एक बच्चे के विकास को प्रभावित कर सकता है, जैसे कि खुद को कितना आश्वस्त या दूसरों के साथ बातचीत करने में वे कितने सहज होते हैं, जब वे वयस्क हो जाते हैं।

बाल विकास पर माता–पिता का प्रभाव (Parental Influences on Child Development) :– माता–पिता की संस्कृति उनके बच्चों के विकास को प्रभावित कर सकती है। उदाहरण के लिए, 2019 के एक अध्ययन में पाया गया कि सांस्कृतिक मूल्य अक्सर माता–पिता द्वारा अपने बच्चों की परवरिश करने के तरीके को प्रभावित करते हैं, जिसमें वे अनुशासन और सीमाएं निर्धारित करते हैं। यह समझ में आता है कि माता–पिता अपने बच्चों की परवरिश करते हैं। सांस्कृतिक प्रभावों के आधार पर क्योंकि वे उन्हें उस संस्कृति के संचालन और फलने–फूलने के लिए आवश्यक व्यवहार विकसित करने के लिए तैयार कर रहे हैं। हालाँकि, जब सामाजिक वातावरण और घरेलू संस्कृति में टकराव होता है, तो विकास संबंधी मुद्दे उत्पन्न हो सकते हैं।

सामूहिकवादी बनाम व्यक्तिवादी संस्कृतियाँ और माता–पिता का अनुशासन (Collectivist vs-Individualistic Cultures and Parental Discipline) :– माता–पिता सांस्कृतिक प्रभाव प्रभावित कर सकते हैं कि वे बच्चे के व्यवहार को कैसे अनुशासित करते हैं। यह, बदले में, एक बच्चे के विकास को प्रभावित कर सकता है, खासकर अगर अनुशासन के वे तरीके प्रमुख सांस्कृतिक परंपरा से भिन्न होते हैं।

अनुशासन और संस्कृति के तरीकों में तल्लीन करने से पहले, ''सामूहिकतावादी'' और ''व्यक्तिवादी'' शब्दों का वास्तव में क्या अर्थ है? अनिवार्य रूप से, एक सामूहिक संस्कृति मूल्यों और व्यक्तिगत जरूरतों के साथ–साथ उदार, दयालु, सहयोगी व्यवहार पर समुदाय की जरूरतों को प्राथमिकता देती है। सामूहिकवाद एशियाई, मध्य अमेरिकी, दक्षिण अमेरिकी और अफ्रीकी संस्कृतियों में आदर्श है।

अध्ययन में पाया गया कि व्यक्तिवादी संस्कृतियों के माता–पिता सामूहिक संस्कृतियों से माता–पिता से अलग तरीके से अनुशासन करते हैं। माता–पिता का पूर्व समूह अपने बच्चों को व्यक्तिगत रूप से उनके लिए महत्वपूर्ण कुछ ले कर अनुशासित कर सकता है। दूसरी ओर, सामूहिक संस्कृतियों के माता–पिता अपने बच्चों को यह सोचने के लिए कह सकते हैं कि उनका व्यवहार दूसरों को कैसे प्रभावित करता है।

बाल विकास को प्रभावित किया जा सकता है यदि माता–पिता या शिक्षक प्रमुख संस्कृति के अनुसार बच्चों को अनुशासित करते हैं – यू.एस. की संस्कृति के बजाय एक व्यक्तिवादी संस्कृति हैः उनके मूल के परिवार की। उदाहरण के लिए, जिन बच्चों के माता–पिता ने उन्हें प्रतिस्पर्धा पर सहयोग को महत्व देने के लिए अनुशासित किया है, वे भ्रमित या परेशान हो सकते हैं जब एक शिक्षक उन्हें प्रतिस्पर्धी होने का आग्रह करता है।

बच्चों के सामाजिक व्यवहार पर माता–पिता का प्रभाव संस्कृति द्वारा भिन्न होता है :–

- बच्चे अपने माता–पिता के साथ बातचीत करके कार्य करना सीखते हैं। इस कारण से, माता–पिता की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अक्सर बच्चे के व्यवहार को प्रभावित करती है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- संचार शैली बिंदु में एक मामला है। बच्चे एक ऐसी शैली में संवाद करते हैं जो उनके माता–पिता के संवाद करने के तरीके से मिलता–जुलता है, और विविध संस्कृतियाँ चीजों को अलग–अलग तरीकों से समझाती हैं।
- एक व्यक्तिवादी सांस्कृतिक मॉडल के आधार पर संवाद करने वाले बच्चे अक्सर स्वायत्तता और व्यक्तिगत पसंद के विषयों के साथ लंबी, आत्म–केंद्रित कहानियां सुनाते हैं। इसके विपरीत, जो बच्चे एक सामूहिक सांस्कृतिक मॉडल के आधार पर संवाद करते हैं, वे अक्सर अधिकार और अंतर्संबंधों के विषयों के साथ संक्षिप्त, अन्य–उन्मुख कहानियां सुनाते हैं।
- बच्चों के भाषा विकास पर ये सांस्कृतिक प्रभाव उन्हें खेल के मैदान में और बाद में कार्यस्थल पर मदद या बाधा डाल सकते हैं। यदि स्कूल में बच्चों की संस्कृति का सम्मान किया जाता है, जिसमें बच्चे दूसरों के साथ मौखिक रूप से बातचीत करते हैं, तो उन्हें उस स्वीकृति और सम्मान का अनुभव करने की अधिक संभावना होगी जिसकी उन्हें बढ़ने और विकसित होने की आवश्यकता है। वे एक स्वस्थ आत्म–छवि वाले वयस्क बनने की अधिक संभावना रखते हैं जो समझने योग्य और आत्मविश्वास, फलदायी बातचीत में सक्षम महसूस करते हैं। हालांकि, यदि नहीं, तो वे वयस्क हो सकते हैं जो अपनी आवाज उठाने से हिचकिचाते हैं और उपहास या गलत समझे जाने के डर से उनकी बात सुनी जाती है।

बाल विकास पर पर्यावरणीय प्रभाव :– बाल विकास पर पर्यावरणीय प्रभावों में समुदाय और संस्कृति के साथ–साथ पर्यावरणीय स्वास्थ्य खतरों से प्रभाव शामिल हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, पास के बिजली संयंत्र से प्रदूषण, दूषित पानी या घर में सीसा, बच्चों के स्वास्थ्य पर स्थायी प्रभाव डाल सकता है। सीडीसी की रिपोर्ट के अनुसार, पर्यावरण के दूषित तत्व वयस्कों की तुलना में बच्चों को अधिक नुकसान पहुंचा सकते हैं क्योंकि बच्चों के शरीर अभी भी विकसित हो रहे हैं।

वास्तव में, बच्चे शरीर के वजन के प्रति पाउंड अधिक हवा, पानी और भोजन ग्रहण करते हैं, जिससे वे पर्यावरणीय खतरों से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं जीवन में बाद में प्रकट नहीं हो सकती हैं, जिससे स्कूल, काम और समाजीकरण में कठिनाई हो सकती है। उदाहरण के लिए, प्रदूषित हवा के संपर्क में आने वाले बच्चे को किशोरावस्था में अस्थमा हो सकता है।

कम आय वाले समुदायों के बच्चों को पर्यावरणीय खतरों के जोखिम का सबसे अधिक खतरा होता है। जैसा कि राष्ट्रीय पर्यावरण स्वास्थ्य संघ की रिपोर्ट है, कम आय वाले समुदायों के पास खराब बुनियादी ढांचा हो सकता है, जिससे वे प्राकृतिक आपदाओं के प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं, जैसे कि दूषित पानी और क्षतिग्रस्त जल निकासी प्रणाली, वे कारखानों और राजमार्गों के करीब भी स्थित हो सकते हैं, जो दोनों हवा , मिट्टी , और पानी में उच्च स्तर के प्रदूषण में योगदान करते हैं।

Unit :–1.4 Parenting and its types and its impact on children's education (पेरेंटिंग और इसके प्रकार और बच्चों की शिक्षा पर इसका प्रभाव) – पेरेंटिंग का तात्पर्य शैशवावस्था से वयस्कता तक बच्चे के पालन–पोषण और देखभाल की प्रक्रिया से है। इसमें एक बच्चे को एक जिम्मेदार और उत्पादक वयस्क के रूप में विकसित करने में मदद करने के लिए शारीरिक देखभाल, भावनात्मक समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करना शामिल है। पालन–पोषण के कई प्रकार हैं, जिनमें शामिल हैं:

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

अधिनायकवादी पालन–पोषण :– यह शैली सख्त नियमों, उच्च उम्मीदों और गर्मजोशी की कमी की विशेषता है। अधिनायकवादी माता–पिता द्वारा पाले गए बच्चों को स्वतंत्रता के साथ कठिनाई हो सकती है और वे आत्म–सम्मान के मुद्दों से जूझ सकते हैं।

आधिकारिक पेरेंटिंग :– इस शैली की विशेषता दृढ़, सुसंगत नियम और उच्च अपेक्षाएं हैं, लेकिन गर्मजोशी और समर्थन भी है। आधिकारिक माता–पिता द्वारा पाले गए बच्चे आत्मविश्वासी, आत्म–अनुशासित और शिक्षाविदों और रिश्तों दोनों में सफल होते हैं।

अनुमेय पेरेंटिंग :– इस शैली की विशेषता नियमों और संरचना की कमी है, जिसमें माता–पिता अपने बच्चों की मांगों को पूरा करते हैं। अनुमेय माता–पिता द्वारा उठाए गए बच्चे आत्म–नियंत्रण और निर्णय लेने के साथ संघर्ष कर सकते हैं।

असंबद्ध पेरेंटिंग :– इस शैली की विशेषता गर्मजोशी, समर्थन और संरचना की कमी है। असंबद्ध माता–पिता द्वारा पाले गए बच्चों को रिश्तों में कठिनाई हो सकती है और भावनात्मक विनियमन के साथ संघर्ष करना पड़ सकता है।

एक बच्चे के अनुभवों के पालन–पोषण का प्रकार उनकी शिक्षा और भविष्य की सफलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। एक सहायक और संरचित वातावरण में पले–बढ़े बच्चों के अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने और सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की संभावना अधिक होती है। दूसरी ओर, जिन बच्चों को पर्याप्त समर्थन और मार्गदर्शन नहीं मिलता है, वे प्रेरणा और अकादमिक प्रदर्शन के साथ संघर्ष कर सकते हैं।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पेरेंटिंग एक आकार–फिट–सभी दृष्टिकोण नहीं है, और अलग–अलग बच्चे पेरेंटिंग की विभिन्न शैलियों के लिए बेहतर प्रतिक्रिया दे सकते हैं। माता–पिता के लिए लचीला होना और उनकी पेरेंटिंग शैली को अपनाना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उनका बच्चा बढ़ता और विकसित होता है।

Unit :– 1.5 Challenges of parents of 21st century modern day learners.(21वीं सदी के आधुनिक शिक्षार्थियों के माता–पिता की चुनौतियाँ) – पिछले माता–पिता के दर्शन में माता–पिता ओवररिएक्टिंग, अंडररिएक्टिंग या इनकार करते हैं, अपने बच्चों के व्यवहार के लिए बहाने बनाते हैं, विकल्प बनाम दिशा प्रदान करते हैं, जिससे बच्चों को भ्रम पैदा होता है जब उन्हें सीमाओं और दिशा की आवश्यकता होती है। पिछले दशकों में, हमने देखा है कि माता–पिता अपने बच्चों के साथ भीख माँगते हैं और बातचीत करते हैं, उन्हें सही काम करने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से खरीदने के लिए कमजोर प्रयास करते हैं, कभी–कभी पैसे, गैजेट और अवसर उन पर फेंक देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक का निर्माण होता है अधिकार की भावना और सुरक्षा की झूठी भावना के साथ आत्म–लिप्त बच्चे। और बाद में उन्होंने किशोरावस्था या वयस्कता में पहुंचने के बाद अपने बच्चों के चेहरे पर यह उड़ाते देखा, जहां व्यवहार और रवैया बहुत कम क्षमाशील और स्वीकार किए जाते हैं।

आज, कई किशोर, कॉलेज से जुड़े युवा वयस्क, और स्नातक इस बात का सबूत हैं कि चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए कौशल और मुकाबला तंत्र के साथ निहत्थे हैं। वे प्रस्तुत किए जाते हैं और इसके बजाय उम्मीदों को प्रदर्शित करना जारी रखते हैं कि दुनिया उनके साथ वैसा ही व्यवहार करेगी जैसा उनके

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

माता–पिता ने किया था – और निश्चित रूप से परिणाम पर आश्चर्यचकित हैं। हम देखते हैं कि युवा वयस्क एक नौकरी या अवसर से दूसरी नौकरी में कूदते हैं, या कॉलेज खत्म करने के लिए लंबा समय लेते हैं, और अक्सर लॉन्च करने के असफल प्रयासों के कारण घर लौटते हैं। सामान्य तौर पर, वे जीवन की चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए उस तरह की स्वतंत्रता और क्षमता विकसित नहीं कर रहे हैं।

कुछ मामलों में, ये युवा अवसाद, चिंता, या आतंक हमलों का प्रदर्शन करते हैं, आत्म–नुकसान में संलग्न होते हैं, या खराब निर्णय लेते हैं जो उनकी सफलता को प्रभावित करते हैंय यह मुख्य रूप से है। क्योंकि माता–पिता अपने जीवन के आरंभ में और पूरे जीवन में शामिल नहीं थे, उन्हें कभी–कभी नकारात्मक विकल्पों से दूर निर्देशित, मॉडलिंग और कोचिंग करते थे, जिनकी ओर वे अब बदल गए हैं।

यह पुस्तक माता–पिता को उन चुनौतियों और अवसरों को पहचानना सिखाती है जिनका बच्चों को पुराने 3R में एक नया मोड़ डालकर सामना करना पड़ता है, यह सुझाव देता है कि माता–पिता को अपने बच्चे की दुनिया पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

- अपने बच्चे के वातावरण को पढ़ना सीखें, उन चुनौतियों, संघर्षों या अवसरों को पहचानें जो उनके बच्चों के सामने पेश किए जाते हैं, जानें कि उन्हें कौन और क्या प्रभावित करता है, और जानें कि यह सब उनके प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करता है।
- अपने बच्चों के भावनात्मक नियंत्रण को विनियमित और विकसित करने में मदद करें। भावनात्मक नियंत्रण सिखाकर, माता–पिता सीख सकते हैं कि कैसे बच्चे नकारात्मक मनोदशा की स्थिति में फिसल जाते हैं – जो, अगर अनियंत्रित छोड़ दिया जाता है, तो उनकी सफलता को प्रभावित कर सकता है, उनके द्वारा किए गए निर्णयों और उनके द्वारा प्रदर्शित व्यवहार के साथ–साथ उनकी दुनिया में उनकी प्रतिक्रियाओं को भी प्रभावित कर सकता है।
- सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने के लिए अपने बच्चों के व्यवहार को पुनर्निर्देशित करें, जिससे उनके बच्चों को प्रासंगिक लक्ष्यों को पूरा करने में मदद मिलती है जो उनके वर्तमान और भविष्य के प्रयासों के लिए आत्म–मूल्य, आत्म आश्वासन और प्रेरणा की बढ़ती भावना की ओर ले जाते हैं।

माता–पिता के सामने कौन–सी नई चुनौतियाँ हैं और वे कहाँ से आती हैं?

आज, बच्चों को उन चुनौतियों और खतरों का सामना करना पड़ता है जिनके बारे में हममें से अधिकांश ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि हम बड़े हो रहे हैं। ऑनलाइन शिकारियों, बड़े पैमाने पर स्कूल में गोलीबारी, साइबर धमकी – ये सभी भ्रम, चिंता, अवसाद, प्रदर्शन के मुद्दों और आत्मघाती व्यवहार को जन्म दे सकते हैं। इसके अलावा, वे हमारी कल्पना से भी अधिक समय स्क्रीन पर देखने में बिताते हैं, हमारे नियंत्रण से परे अविश्वसनीय मात्रा में जानकारी को अवशोषित करते हैं। इन प्रभावों के परिणाम, साथ ही साथ सामाजिक दबाव, उनके दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं।

इसके अलावा, परिवार की शिथिलता, तलाक और पुनर्विवाह के लिए समर्थन और समायोजन की कमी, और माता–पिता की जागरूकता की कमी कि यह उनके बच्चे को कैसे प्रभावित करता है, अक्सर अवसाद और चिंता का कारण बन सकता है, स्कूल में कठिनाई के साथ–साथ वयस्कों के रूप में भी रिश्ते। सोशल मीडिया का प्रभाव, ऑनलाइन पोर्नोग्राफी, मादक द्रव्यों के सेवन, और बदमाशी सभी विकल्प हैं, कुछ बच्चे अब भावनात्मकता की बढ़ी हुई डिग्री से निपटने के लिए बदल जाते हैं क्योंकि माता–पिता ध्यान नहीं दे रहे हैं। यह, स्वस्थ मुकाबला तंत्र की कमी और साथियों के साथ सकारात्मक सामाजिक संपर्क और एकीकरण की कमी के

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

साथ, प्रभावित करता है कि बच्चे संघर्ष और चुनौतियों से कैसे निपटते हैं और उनकी क्षमता, उद्देश्य और आत्मविश्वास के बारे में प्रश्न पैदा करते हैं।

बच्चे के जीवन में क्या हो रहा है, इस पर ध्यान दें और नए 3Rs को शामिल करें। बच्चे के वातावरण को पढ़ें, बच्चे के जीवन में क्या हो रहा है और उसकी दुनिया को क्या प्रभावित करता है, इस पर पूरा ध्यान दें। बच्चों को अपने भावनात्मक तापमान को नियंत्रित करने में मदद करें कि वे प्रभावों पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, उन्हें सिखाते हैं कि उनकी भावनाओं को कैसे नियंत्रित किया जाए, और उनके व्यवहार को पुनर्निर्देशित किया जाए, उनके बच्चे की उपलब्धियों और निराशाओं पर ध्यान दिया जाए और उन्हें उनकी सर्वोच्च व्यक्तिगत सफलता और महत्व के लिए निर्देशित किया जाए।

साथ ही, यह जानना महत्वपूर्ण है कि आत्म–सम्मान, आत्म–अवधारणा, और प्रेरणा जन्मसिद्ध अधिकार नहीं हैं। उनके लिए काम करना पड़ता है, और शिक्षक होना माता–पिता की जिम्मेदारी है। आज, पालन–पोषण एक बच्चे का सबसे अच्छा दोस्त होने या नवीनतम तकनीक खरीदने से कहीं अधिक है। यह नेतृत्व के बारे में है और कभी–कभी अलोकप्रिय निर्णय लेने पड़ते हैं क्योंकि यह बच्चे के सर्वोत्तम हित में है। अगर माता–पिता नहीं करेंगे, तो कोई और नहीं करेगा।

Unit :– 2 Family and disability (परिवार और विकलांगता)

Unit :– 2.1 Stages of reaction and impact and coping of having a child with disability (प्रतिक्रिया के चरण और प्रभाव और विकलांग बच्चे के होने का सामना करना) – बौद्धिक अक्षमता वाले परिवार के किसी सदस्य के होने का प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ सकता है। माता–पिता, भाई–बहन और विस्तारित परिवार के सदस्य। यह परिवारों के लिए एक अनूठा साझा अनुभव है और परिवार के कामकाज के सभी पहलुओं को प्रभावित कर सकता है। सकारात्मक पक्ष पर यह क्षितिज का विस्तार कर सकता है, परिवार के सदस्यों को उनकी आंतरिक शक्ति के बारे में जागरूकता बढ़ा सकता है, पारिवारिक सामंजस्य को बढ़ा सकता है, और समुदाय से जुड़ाव को प्रोत्साहित कर सकता है। दूसरी ओर, एक विकलांग बच्चे/वयस्क की देखभाल के साथ जुड़े समय और वित्तीय लागत, शारीरिक और भावनात्मक मांगों और रसद संबंधी जटिलताओं के दूरगामी प्रभाव हो सकते हैं। प्रभाव संभावित रूप से स्थिति और गंभीरता के प्रकार के साथ–साथ परिवार के भौतिक, भावनात्मक और वित्तीय साधनों और उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करेगा।

परिवारों के लिए, एक विकलांग परिवार के सदस्य की देखभाल करने से तनाव बढ़ सकता है, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है, उचित और सस्ती बाल देखभाल प्राप्त करना मुश्किल हो सकता है, और काम, शिक्षा – प्रशिक्षण, अतिरिक्त बच्चे पैदा करने और निर्भर रहने के बारे में निर्णय प्रभावित हो सकते हैं।

देखभाल और सहायता प्रदान करने के दिन–प्रतिदिन के तनाव के कारण परिवार के सदस्यों की शारीरिक और भावनात्मक ऊर्जा पर बोझ पड़ता है और थकान होती है। ऐसे कई मुद्दे हैं जो भावनात्मक तनाव पैदा करते हैं, जिसमें चिंता, अपराधबोध, चिंता, क्रोध, और विकलांगता के कारण के बारे में अनिश्चितता, भविष्य के बारे में, परिवार के अन्य सदस्यों की जरूरतों के बारे में, इस बारे में कि क्या कोई पर्याप्त सहायता प्रदान कर रहा है,

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

और इसी तरह विकलांग व्यक्ति के कार्य के नुकसान पर शोक शुरुआत के समय अनुभव किया जाता है, और अक्सर व्यक्ति के जीवन के अन्य चरणों में बार–बार होता है।

पारिवारिक जीवन बदल जाता है, अक्सर प्रमुख तरीकों से। देखभाल – जिम्मेदारियाँ लेने से कैरियर की योजनाएँ बदल सकती हैं या परित्यक्त हो सकती हैं। परिवार की महिला सदस्यों द्वारा देखभाल देने वाली भूमिकाएँ निभाने की अधिक संभावना होती है और इस प्रकार वे अपनी कार्य भूमिकाएँ छोड़ देते हैं या बदल जाते हैं। यह इस तथ्य से भी प्रभावित है कि पुरुष समाज में काम के लिए अधिक पैसा कमाने में सक्षम हैं। जब विकलांगता के अतिरिक्त वित्तीय बोझ पर विचार किया जाता है, तो परिवारों के लिए भूमिका जिम्मेदारियों को विभाजित करने का यह सबसे कारगर तरीका है।

परिवार के सदस्यों के बीच नए गठबंधन और वफादारी कभी–कभी उभरती हैं, कुछ सदस्य बहिष्कृत महसूस करते हैं और अन्य अत्यधिक आकर्षित होते हैं। उदाहरण के लिए, प्राथमिक देखभाल करने वाला विकलांग व्यक्ति के साथ अत्यधिक रूप से शामिल हो सकता है। यह विशेष रूप से विकलांग बच्चों की माताओं के संबंध में नोट किया गया है। इन परिवारों में, पिता अक्सर बच्चे के साथ कम जुड़े होते हैं और इसके बजाय काम या अवकाश गतिविधियों में खुद को विसर्जित कर देते हैं। यह पैटर्न आमतौर पर अधिक वैवाहिक संघर्ष से जुड़ा होता।

विकलांगता समय, ऊर्जा और धन के परिवार के संसाधनों के अनुपातहीन हिस्से का उपभोग कर सकती है, ताकि अन्य व्यक्ति और परिवार की जरूरतें पूरी न हो सकें। परिवार अक्सर ''एक बार में एक दिन'' जीने की बात करते हैं। परिवार की जीवन शैली और अवकाश गतिविधियों को बदल दिया जाता है। परिवार के सपने और भविष्य की योजनाएं छोड़ी जा सकती हैं। सामाजिक भूमिकाएं बाधित होती हैं क्योंकि अक्सर उन्हें समर्पित करने के लिए पर्याप्त समय, पैसा या ऊर्जा नहीं होती है। जबकि परिवारों पर विकलांगता के प्रभाव के संबंध में कई समानताएं हैं, अन्य कारक परिवार पर विकलांगता के प्रभाव में परिवर्तनशीलता की ओर ले जाते हैं। इन कारकों में शामिल हैं विकलांगता का प्रकार, परिवार के किस सदस्य को विकलांगता मिलती है, और विकलांगता की शुरुआत की उम्र।

जब यह प्रगतिशील होता है रोगसूचक व्यक्ति तेजी से कम कार्यात्मक हो सकता है। परिवार को बढ़ती देखभाल की मांगों, निर्भरता की डिग्री के बारे में अनिश्चितता और रहने की व्यवस्था सबसे अच्छी है, साथ ही साथ लगातार नुकसान का भी सामना करना पड़ रहा है। इन परिवारों को लगातार बढ़ते तनाव के साथ सामंजस्य बिठाने की जरूरत है और इसके लिए तैयार रहना चाहिए। बाहरी संसाधनों को खोजने और उनका उपयोग करने के लिए। यदि किसी स्थिति में एक पुनरावर्ती पाठ्यक्रम है (जैसे मिर्गी या छूट में कैंसर), तो चल रही देखभाल कम हो सकती है, लेकिन एक परिवार को खुद को जल्दी से पुनर्गठित करने और स्थिति के बढ़ने पर संसाधन जुटाने में सक्षम होने की आवश्यकता होती है। उन्हें सामान्य स्थिति से संकट की चेतावनी की ओर तेजी से बढ़ने में सक्षम होना चाहिए। इन नाटकीय परिवर्तनों का संचय एक परिवार को समाप्त कर सकता है। एक निरंतर पाठ्यक्रम (जैसे रीढ़ की हड्डी की चोट) के साथ विकलांगता के लिए शुरुआत में परिवार के बड़े पुनर्गठन की आवश्यकता होती है और फिर लंबे समय तक दृढ़ता और सहनशक्ति की आवश्यकता होती है। जबकि ये परिवार योजना बना सकते हैं, यह जानते हुए कि आगे क्या है, सीमित सामुदायिक संसाधन उनकी मदद करने के लिए थकावट का कारण बन सकते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

विकलांगता जहां मानसिक क्षमता सीमित है, परिवारों के लिए सामना करना अधिक कठिन प्रतीत होता है। यह अधिक निर्भरता के कारण हो सकता है जिसके लिए परिवार के सदस्यों द्वारा अधिक सतर्कता की आवश्यकता होती है, या क्योंकि यह व्यक्ति की जिम्मेदार भूमिका निभाने की क्षमता को सीमित करता है, और शायद स्वतंत्र जीवन की संभावनाओं को सीमित करता है। यदि मानसिक दुर्बलता गंभीर है, तो यह परिवारों के लिए एक अतिरिक्त प्रकार का तनाव पैदा कर सकता है क्योंकि व्यक्ति परिवार में शारीरिक रूप से मौजूद है लेकिन मानसिक रूप से अनुपस्थित है। भौतिक उपस्थिति और मनोवैज्ञानिक उपस्थिति के बीच इस तरह की असंगति को सीमा अस्पष्टता (बॉस 1993) कहा गया है। सीमा अस्पष्टता का अर्थ है कि परिवार के सदस्यों के लिए यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि व्यक्ति (इस मामले में विकलांग) परिवार का हिस्सा है या नहीं क्योंकि वह व्यक्ति कुछ मायनों में है लेकिन दूसरों में नहीं है। आम तौर पर, जब परिस्थितियां अस्पष्ट या अस्पष्ट होती हैं, तो परिवार अधिक संकट का अनुभव करते हैं क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या उम्मीद की जाए और इस अनिश्चितता को समायोजित करने के लिए परिवार के अन्य सदस्यों की भूमिकाओं की योजना बनाने में कठिन समय हो सकता है।

व्यक्ति की उम्र जब विकलांगता उभरती है, परिवार और परिवार के जीवन के पाठ्यक्रम पर विभिन्न प्रभावों के साथ–साथ विकलांग व्यक्ति के विकास के दौरान से जुड़ी होती है। जब देर से वयस्कता में स्थितियां सामने आती हैं, तो कुछ मायनों में यह मानक और अधिक अपेक्षित होता है। मनोवैज्ञानिक रूप से यह आमतौर पर परिवार के लिए कम विघटनकारी होता है। जब किसी व्यक्ति के जीवन में पहले विकलांगता होती है, तो यह मानक के अनुसार चरण से बाहर है, और व्यक्ति और परिवार के विकास के पाठ्यक्रम पर प्रभाव अधिक होता है। अधिक समायोजन करना पड़ता है और लंबे समय तक करना पड़ता है।

जब स्थिति जन्म से मौजूद होती है, तो बच्चे का जीवन और पहचान विकलांगता के इर्द–गिर्द आकार लेती है। कुछ मायनों में एक बच्चे और उसके परिवार के लिए बाद में अचानक क्षमताओं के नुकसान की तुलना में कुछ कार्यात्मक क्षमताओं को कभी भी समायोजित करना आसान हो सकता है। उदाहरण के लिए, जन्म से स्पाइना बिफिडा वाला बच्चा उस बच्चे की तुलना में अलग तरह से अनुकूलन करेगा जो चोट के कारण किशोरावस्था में अचानक लकवाग्रस्त हो जाता है।

माता–पिता की उम्र जब बच्चे की विकलांगता का निदान किया जाता है, यह भी एक महत्वपूर्ण विचार है कि परिवार कैसे प्रतिक्रिया करता है। उदाहरण के लिए, किशोर माता–पिता खराब अनुकूलन का अनुभव करने के लिए अधिक जोखिम में हैं क्योंकि उनकी अपनी विकास संबंधी आवश्यकताएं अभी भी प्रमुख हैं, और बच्चे की अतिरिक्त मांगों का सामना करने के लिए उनके पास परिपक्वता और संसाधन होने की संभावना कम है। वृद्ध माता–पिता के लिए डाउन सिंड्रोम जैसे कुछ विकलांग बच्चे होने का अधिक जोखिम होता है। वृद्ध माता–पिता में आवश्यक देखभाल के अतिरिक्त बोझ के लिए सहनशक्ति की कमी हो सकती है, और वे अपनी मृत्यु से डर सकते हैं और इस बात से चिंतित हो सकते हैं कि मरने पर उनके बच्चे की देखभाल कौन करेगा।

जब युवावस्था में विकलांगता की शुरुआत होती है, तो व्यक्ति की व्यक्तिगत, पारिवारिक और भविष्य के लिए व्यावसायिक योजनाओं में महत्वपूर्ण रूप से बदलाव किया जा सकता है। यदि युवा वयस्क के पास एक साथी है जहां दीर्घकालिक प्रतिबद्धता है, तो यह संबंध खतरे में पड़ सकता है, खासकर यदि यौन साथी, माता–पिता, वित्तीय प्रदाता, या अवकाश साथी के रूप में वयस्क भूमिका निभाने की क्षमता प्रभावित होती है (Ireys and Burr 1984)।

जब वयस्कों की विकलांगता उनके मध्य वर्षों में होती है, तो यह अक्सर करियर और पारिवारिक भूमिकाओं में बड़े व्यवधान से जुड़ा होता है। वे भूमिकाएं विकलांग व्यक्ति के साथ–साथ परिवार के अन्य सदस्यों के लिए भी

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

प्रभावित होती हैं जो उन भूमिकाओं को पूरा करने के लिए उस पर निर्भर हो गए हैं। भूमिकाओं, नियमों और दिनचर्या के किसी प्रकार के पारिवारिक पुनर्गठन की आमतौर पर आवश्यकता होती है। यदि व्यक्ति को नियोजित किया गया है, तो उसे काम और करियर को पूरी तरह से छोड़ना पड़ सकता है या शायद काम की मात्रा और प्रकार में नाटकीय परिवर्तन करना पड़ सकता है।

एक मध्यम आयु वर्ग के विकलांग वयस्कों के बच्चे भी भूमिका में बदलाव का अनुभव करते हैं। उनकी अपनी निर्भरता और पोषण संबंधी जरूरतों की उपेक्षा की जा सकती है। उनसे कुछ वयस्क भूमिकाएँ निभाने की अपेक्षा की जा सकती है, जैसे छोटे बच्चों की देखभाल करना, घर का काम करना, या शायद कुछ आय प्रदान करना। पुनर्संगठन के लिए परिवार के प्रयास कितने अच्छे हैं, यह अंततः परिवार की आयु–उपयुक्त विकासात्मक आवश्यकताओं को समायोजित करने की क्षमता पर निर्भर करता है। जिन परिवारों में विभिन्न पारिवारिक भूमिकाएँ निभाने में वयस्कों में अधिक लचीलापन होता है, वहाँ समायोजन बेहतर होने की संभावना है।

विकलांग बच्चे का जन्म आमतौर पर परिवार में पांच चरणों में होता है:

1) इनकार (Denial)

2) क्रोध (Anger)

3) सौदेबाजी (Bargaining)

4) डिप्रेशन (Depression)

5) स्वीकृति (Acceptance)

सामना करने की रणनीतियाँ (Coping Strategies) – माता–पिता तनावपूर्ण स्थिति से निम्नलिखित तरीके से निपटते हैं–

- अपेक्षा में परिवर्तन करके
- सुधार – समस्या को बेहतर बनाने के लिए
- समस्या की पहचान करके

मुकाबला संसाधन (Coping Resources) :–

- आंतरिक संसाधन
- ईश्वर पर भरोसा
- ऊर्जा
- आत्मनिर्णय
- समस्या समाधान कौशल
- सामाजिक आर्थिक स्थिति
- सामान्य और विशिष्ट मान्यताएं

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

बाहरी संसाधन (External Resource) :–

- सामुदायिक स्वीकृति
- मजबूत विस्तारित परिवार
- सहयोगी साथी
- करीबी दोस्त और रिश्तेदार
- गैर–न्यायिक पेशेवर

मुकाबला करने में अवरोधक (Inhibitors Of coping) :–

- परिवार के सदस्य का खराब शारीरिक स्वास्थ्य।
- पारिवारिक परेशानी
- समर्थन का नुकसान
- स्वीकृति की कमीः परिवार, समाज, रिश्तेदार, मित्र सहकर्मी
- पेशेवरों द्वारा गुमराह
- जानकारी का अभाव

Unit :– 2.2 Involving parents in diagnosis, fitment of aids and acceptance of disability by family- (निदान, सहायता के निर्धारण और परिवार द्वारा विकलांगता की स्वीकृति में माता–पिता को शामिल करना) – निदान प्रक्रिया, स्वयं, आसानी से परिभाषित नहीं है। यह कई कारकों से प्रभावित होता है। बच्चे की वास्तविक अक्षमता , निदान के समय बच्चे की आयु , और निदान करने वाली एजेंसी या पेशेवर सभी प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं . इसलिए, यह प्रत्येक परिवार के लिए भिन्न हो सकता है। कुछ परिवारों के लिए निदान प्रक्रिया बच्चे के जन्म के तुरंत बाद या उससे पहले भी शुरू हो सकती है, और आनुवंशिक परीक्षण के परिणामों के प्रकटीकरण के साथ शीघ्र ही समाप्त हो सकती है। अन्य परिवारों के लिए यह प्रक्रिया बहुत लंबी हो सकती है और कभी भी इसका कोई निश्चित अंत नहीं होता है। कुछ परिवार अंततः उस पर पहुंचते हैं जिसे वे एक सटीक निदान मानते हैं, कुछ अनिश्चित काल तक खोज करते रहते हैं, जबकि अन्य निश्चित निदान प्राप्त करने से पहले खोज को छोड़ देते हैं।

कई शोधकर्ता और परिवार प्रक्रिया की शुरुआत को उस समय के रूप में परिभाषित करते हैं जब बच्चे के स्वास्थ्य या विकास के बारे में पहली बार चिंता व्यक्त की गई थी। यह प्रारंभिक चिंता पेशेवरों या माता–पिता द्वारा व्यक्त की जा सकती है। उन चिंताओं से अक्सर किसी प्रकार का मूल्यांकन होता है, चाहे चिकित्सा, शैक्षिक, चिकित्सीय, या इन विषयों का संयोजन। विभिन्न विषयों में अक्सर निदान प्रक्रिया के लिए अलग–अलग नाम भी होते हैं। विभिन्न पेशेवरों के लिए मूल्यांकन, मूल्यांकन, पहचान और निदान सभी का एक ही मतलब हो सकता है। ये विभिन्न शब्द निदान प्रक्रिया के विभिन्न उद्देश्यों में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। पेशेवर शैक्षिक या चिकित्सीय सेवाओं के लिए पात्रता, दवा या सर्जिकल हस्तक्षेप की अनुमति, या इनमें से किसी भी संयोजन के लिए निदान का उपयोग कर सकते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

पेशेवरों द्वारा उपयोग किए जाने वाले विभिन्न शब्द भी उनकी चुनी हुई पेशेवर शाखा से मेल खाते हैं जिसमें ''निदान'' शब्द चिकित्सा पेशे से उत्पन्न होता है। ऐतिहासिक रूप से, विकलांगों का निदान चिकित्सा पेशेवरों द्वारा किया गया था। जैसा कि संदर्भ खंड में आगे चर्चा की जाएगी, पिछले 30 वर्षों में चिकित्सा पेशे को कई अन्य निदान एजेंसियों द्वारा जोड़ा गया है और निरंतरता के लिए मैंने सभी पेशेवर शाखाओं के लिए ''निदान'' शब्द का उपयोग करना चुना है।

कुछ परिवारों के लिए मूल्यांकन परिणामों का प्रकटीकरण और बाद में अनुवर्ती कार्रवाई निदान प्रक्रिया को समाप्त करती है और उपचार प्रक्रिया शुरू करती है। अन्य परिवारों के लिए यह कई मूल्यांकनों और परीक्षणों में से केवल पहला हो सकता है जो अंततः एक निश्चित निदान का कारण बन सकता है या नहीं भी हो सकता है। कई परिवारों को बिना किसी स्पष्ट कारण के विकास में देरी का निदान ही मिल सकता है। इन परिवारों के लिए निदान प्रक्रिया केवल तभी समाप्त हो सकती है जब वे अधिक निश्चित निदान की खोज करना बंद करना चुनते हैं। निदान और उपचार प्रक्रियाएं ओवरलैप हो सकती हैं। विकासात्मक देरी का एक प्रारंभिक निदान एक बच्चे को सेवाओं के लिए योग्य बना सकता है लेकिन माता–पिता और ६ या पेशेवर अधिक परिष्कृत निदान की खोज जारी रख सकते हैं।

अधिकांश बच्चों का निदान माता–पिता द्वारा निदान की खोज के माध्यम से विशेष आवश्यकताओं के साथ किया जाता है। जबकि कुछ बच्चों का निदान जन्म के तुरंत बाद या नियमित देखभाल के दौरान चिकित्सा परीक्षण के माध्यम से किया जा सकता है, अधिकांश विकलांगता निदान प्रक्रिया के माता–पिता द्वारा शुरू किए जाने के बाद ही किए जाते हैं। माता–पिता कई कारणों से अपने बच्चे के लिए निदान का अनुसरण कर सकते हैं। कई माता–पिता निदान का अनुसरण करते हैं क्योंकि यह अक्सर उनके बच्चे की कमी वाले क्षेत्रों को पूरा करने के लिए सेवाओं की कुंजी रखता है। यदि माता–पिता अपने बच्चों के लिए सहायता चाहते हैं तो अक्सर यह साबित हो जाने या निदान होने के बाद ही दिया जाता है कि उनके बच्चे को विशेष आवश्यकता है। अधिकांश सेवाएं वित्तीय रूप से निदान पर निर्भर हैं। स्रोत चाहे राज्य वित्त पोषण हो या निजी बीमा, बाद की चिकित्सा सेवाओं के लिए भुगतान करने के लिए अक्सर निदान की आवश्यकता होती है। दोनों का अटूट संबंध है। माता–पिता ने उन सेवाओं से इनकार कर दिया है जो वे अपने बच्चे के लिए चाहते थे क्योंकि सेवाएं एक निदान या लेबल के साथ आई थीं जिसे वे स्वीकार नहीं करना चाहते थे। सेवाओं को प्राप्त करने के लिए एक निदान होना चाहिए। निदान की खोज में सेवाओं की खोज एक प्रेरक शक्ति हो सकती है।

माता–पिता अपने बच्चे के लिए निदान करने का एक अन्य कारण ज्ञान है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अधिकांश माता–पिता अपने बच्चे की कमियों को सही ढंग से समझते हैं और उनके लिए स्पष्टीकरण चाहते हैं। अन्य परिवारों को संबंधित मित्रों, परिवार या डॉक्टरों द्वारा एक निदान एजेंसी के पास भेजा गया है और अधिक जानकारी चाहते हैं जो इन चिंताओं को खारिज या पुष्टि करता है। जबकि अधिकांश परिवार चाहते हैं कि अधिकार का व्यक्ति उन्हें बताए कि उनका बच्चा ठीक और परिपूर्ण है, कई परिवारों को एक विशेष आवश्यकता का निदान प्राप्त करने के लिए भी राहत मिल सकती है। एक निदान उन्हें बता सकता है कि वे अपने बच्चे की जरूरतों के सटीक मूल्यांकनकर्ता हैं और वे अपने बच्चे के बारे में इन बातों को सोचने के लिए ''पागल नहीं'' हैं। एक निदान उन्हें कार्रवाई का एक कोर्स, एक संभावित रोग का निदान और समर्थन का एक नेटवर्क दे सकता है। सभी माता–पिता जानना चाहते हैं कि उनका बच्चा कैसे बढ़ेगा और विकसित होगा, वे अपने बच्चे की प्रगति में मदद करने के लिए क्या कर सकते हैं, और ऐसा करने में किसी प्रकार का समर्थन। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता–पिता के लिए जो अक्सर विशिष्ट वृद्धि और विकास पैटर्न का पालन नहीं करते हैं, इस प्रकार की जानकारी और समर्थन महत्वपूर्ण हो सकता है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

निदान प्रक्रिया परिवार को उनके बच्चे की विशेष आवश्यकता के बारे में पहला ज्ञान या पुष्टि है, यह भावनात्मक रूप से भरा अनुभव हो सकता है। यह वह समय है जब वे विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के माता–पिता के रूप में खुद को फिर से परिभाषित करना शुरू करते हैं और जब वे यह निर्माण करना शुरू करते हैं कि विकलांगता से उनके बच्चे का जीवन कैसे प्रभावित होगा। माता–पिता इस समायोजन से कैसे निपटते हैं, इसे निदान प्रक्रिया से जोड़ा जा सकता है। किसी ज्ञात निदान के साथ तालमेल बिठाना आसान हो सकता है। निदान प्रक्रिया द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान माता–पिता को आगे की घटनाओं के लिए भावनात्मक रूप से बेहतर ढंग से तैयार करने में मदद कर सकता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता–पिता सभी माता–पिता की तरह ही शुरुआत करते हैं। अधिकांश लोगों की तरह, उनकी पूर्वकल्पनाएं होती हैं कि एक विकलांग व्यक्ति या बच्चा कैसा होता है, इस बारे में बहुत कम जानते हैं कि उस बच्चे के साथ क्या करना है, और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के माता–पिता और देखभाल करने वालों को संक्रमण करने में मदद करना चाहते हैं। पेशेवरों के पास अक्सर वह जानकारी होती है जो माता–पिता चाहते हैं और उस जानकारी को कितना और कैसे साझा किया जाता है, यह उस परिवार के जीवन में काफी मायने रखता है।

निदान तब होता है जब विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता–पिता ''अपने बच्चे को पेशेवरों के साथ साझा करना शुरू करते हैं। इस असहज समय के दौरान पेशेवर विशेष जरूरतों वाले बच्चे का निदान करने, माता–पिता को जानकारी का खुलासा करने और फिर अगले चरण के माध्यम से परिवारों का मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उपचार और हस्तक्षेप का। माता–पिता के पेशेवरों के साथ यह अक्सर पहला संपर्क होता है जो उनके परिवार के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। अक्सर निदान प्रक्रिया के दौरान बातचीत के आधार पर, माता–पिता सीखते हैं कि क्या वे पेशेवरों पर भरोसा कर सकते हैं इस नई यात्रा में सहयोगी या विरोधियों के रूप में। माता–पिता इस प्रक्रिया को कैसे समझते हैं, यह उनके बच्चे की सेवाओं को प्रभावित कर सकता है। यह अभी और भविष्य में पेशेवरों के साथ उनकी बातचीत को प्रभावित कर सकता है। यह माता–पिता की विकलांगता और उनके बच्चे की स्वीकृति को प्रभावित कर सकता है। यह भी संभावना है कि यह अभी तक खोजे नहीं गए कई और पहलुओं को प्रभावित कर सकता है।

Unit :– 2.3 Importance of family involvement and advocacy in interventional practices (पारंपरिक प्रथाओं में परिवार की भागीदारी और वकालत का महत्व)

सहयोगियों के रूप में परिवारों की भूमिका (Role of families as collaborators) :– विकलांग व्यक्तियों के माता–पिता और परिवारों ने कई भूमिकाएँ निभाई हैं, उनमें से कुछ अवांछित या अनुचित हैं, कुछ आवश्यकता से पैदा हुई हैं, और उनमें से कुछ ने उत्सुकता से गले लगा लिया है। ये भूमिकाएँ उनके बच्चे की समस्याओं, संगठन के सदस्यों, सेवा आयोजकों, पेशेवरों के निर्णयों के प्राप्तकर्ता, शिक्षार्थियों और शिक्षकों, राजनीतिक अधिवक्ताओं, शैक्षिक निर्णय निर्माताओं और सहयोगियों के स्रोत थे।

परिवार के समर्थन की परिभाषा और अर्थ (Definition and meaning of family support) :– परिवार के समर्थन को किसी भी और सभी कार्यों के रूप में परिभाषित किया गया है जो परिवार प्रणाली को मजबूत और बनाए रखने के लिए काम करते हैं, खासकर जब ये क्रियाएं परिवार के आत्मसात करने और बच्चे की अक्षमता की समझ से संबंधित होती हैं।

पारिवारिक सहयोग (Family Support) :– एक परिवार के समर्थन को परिवार के साथ साझेदारी में विकसित किया जाना चाहिए, एक परिवार प्रणाली उन्मुखीकरण के आधार पर, और परिवार की क्षमताओं को मजबूत करने के लक्ष्य के साथ लागू किया जाना चाहिए।

सामाजिक और भावनात्मक समर्थन (Social and Emotional Support) :– बहुत से लोग विकलांगता को एक त्रासदी के रूप में देखते हैं, और कुछ माता–पिता बच्चे और परिवार के जीवन चक्र के सभी चरणों में निरंतर निराशा और दुःख का अनुभव करते हैं। हालांकि, सिनक्लेयर (1993) जिनके बच्चे को ऑटिज्म है, ने कहा कि यह दुख बच्चे की विकलांगता से ही पैदा नहीं होता है।

पुनर्वास में लंबे समय से एक एकीकृत वैचारिक ढांचे का अभाव रहा है। ऐतिहासिक रूप से, इस शब्द ने विकलांगता के प्रति प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला का वर्णन किया है, हस्तक्षेप से लेकर शरीर के कार्य में सुधार के लिए समावेश को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किए गए अधिक व्यापक उपायों तक । कामकाज, विकलांगता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएफ) एक ढांचा प्रदान करता है जिसका उपयोग पुनर्वास के सभी पहलुओं के लिए किया जा सकता है। कुछ विकलांग लोगों के लिए, शिक्षा, श्रम बाजार और नागरिक जीवन में भाग लेने में सक्षम होने के लिए पुनर्वास आवश्यक है। पुनर्वास हमेशा स्वैच्छिक होता है, और कुछ व्यक्तियों को पुनर्वास विकल्पों के बारे में निर्णय लेने में सहायता की आवश्यकता हो सकती है। सभी मामलों में पुनर्वास से विकलांग व्यक्ति और उसके परिवार को सशक्त बनाने में मदद मिलनी चाहिए।

पुनर्वास प्रक्रिया (The rehabilitation process) :–

- समस्याओं और जरूरतों को समझें (Mentify problems and needs)
- संशोधित और सीमित कारक के लिए विलंबित समस्याएं (Belated problems to modifiable and limiting factor)
- लक्ष्य समस्या और लक्ष्य मध्यस्थ को परिभाषित करें उपयुक्त मुझे चुनें (Define target problem and target mediator select appropriate me)
- हस्तक्षेपों की योजना बनाना, कार्यान्वित करना और समन्वय करना (Plan , implement and coordinate interventions)
- प्रभाव का आकलन करें(Assess effects)

माता–पिता बौद्धिक अक्षमता (आईडी) वाले व्यक्तियों की देखभाल, शिक्षा और पर्यवेक्षण में केंद्रीय और सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं। इस प्रमुख भूमिका के बावजूद, साहित्य उनके महत्व को कम करता है। यहां तक कि इजराइल में भी, परिवार के बहुत महत्व के बावजूद, माता–पिता की भूमिका पर शायद ही कभी चर्चा की जाती है। एक विकलांगधविकलांग बच्चे के पालन–पोषण से निपटने के माता–पिता के पैटर्न से संबंधित पेशेवर साहित्य में शोक और संकट की प्रतिक्रियाओं से लेकर स्वीकृति की प्रतिक्रियाओं तक के पैटर्न की एक विस्तृत श्रृंखला का वर्णन किया गया है। माता–पिता को लोगों का मुकाबला करने वाले और विकासात्मक रूप से विकलांग बच्चों, किशोरों और विशेष जरूरतों वाले वयस्कों के रूप में जांचना बहुत महत्वपूर्ण है।

Unit :– 2.4 Concept, components and strategies of family empowerment- (परिवार सशक्तिकरण की अवधारणा, घटक और रणनीतियाँ) :– पिछले अध्ययन में इस्तेमाल की गई परिभाषा के

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

आधार पर, हमने परिवार के सशक्तिकरण को ''विकलांग बच्चे के परिवार की क्षमता और विशेष जरूरतों को स्वतंत्र रूप से अपने जीवन को नियंत्रित करने की क्षमता, और उसी में शामिल प्रक्रिया'' के रूप में परिभाषित किया।

पारिवारिक अधिकारिता समाधान–निर्माण सेवाएं प्रदान करती है जो माता–पिता को पारिवारिक समस्याओं से निपटने में मदद करती है और बाल सुरक्षा, कल्याण और स्थायित्व को बढ़ावा देने के प्रयास में परिवार की ताकत को मजबूत करती है। यह कार्यक्रम उन परिवारों को लक्षित करता है जिन पर दुर्व्यवहार या उपेक्षा के कारण बच्चों को घर से निकाले जाने का खतरा होता है। कार्यक्रम के माध्यम से हम परिवारों के साथ मुद्दों को हल करने और हटाने से बचने, सुरक्षित और स्थिर घर बनाने के लिए काम करते हैं। यह सक्रिय पेरेंटिंग पाठ्यक्रम के माध्यम से समूहों, कार्यशालाओं, परामर्श, प्रशिक्षण आदि के माध्यम से किया जाता है। परिवारों के लिए नए कौशल सीखने के लिए यह कार्यक्रम का इरादा है जो घर को एक सुरक्षित और स्थिर स्थान पर रहने में मदद करता है। परिवार के लिए एक सफल परिणाम के परिणामस्वरूप बच्चे अपने परिवार के साथ रहेंगे और निष्कासन के आघात को सहन नहीं करेंगे।

परिवारों को सशक्त बनाने में, परिवारों में सुरक्षात्मक कारकों, या सकारात्मक गुणों को मजबूत करने के लिए समुदाय आधारित रोकथाम सेवाएं प्रदान की जाती हैं। सेवाएं कौशल, व्यक्तिगत विशेषताओं, ज्ञान, रिश्तों और व्यक्तियों और परिवारों को स्कूल, काम और जीवन में अनुभव की गई चुनौतियों और कठिनाइयों से निपटने में मदद करने के अवसर विकसित करती हैं।

पालन–पोषण और लगाव – जब माता–पिता और बच्चों में एक–दूसरे के लिए मजबूत, स्वस्थ भावनाएँ होती हैं, तो बच्चों को भरोसा होता है कि उनके माता–पिता उन्हें वह प्रदान करेंगे जो उन्हें पनपने के लिए चाहिएय प्यार, स्वीकृति, सकारात्मक मार्गदर्शन और सुरक्षा सहित।

बाल विकास का ज्ञान – माता–पिता जो समझते हैं कि बच्चे कैसे बढ़ते और विकसित होते हैं, वे एक ऐसा वातावरण प्रदान करने में सक्षम होते हैं जहाँ बच्चे अपनी क्षमता तक पहुँच सकें।

माता–पिता का लचीलापन – जीवन में आने वाली सभी प्रकार की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने की क्षमता माता–पिता के लिए महत्वपूर्ण है। माता–पिता जो तनाव का प्रबंधन करने और अच्छी तरह से कार्य करने में सक्षम हैं, उनके बच्चों के प्रति क्रोध और निराशा को निर्देशित करने की संभावना कम होती है।

सामाजिक संपर्क – रचनात्मक, सहायक व्यक्तियों और समुदाय के साथ जुड़ाव की भावना रखने से परिवार के पालन–पोषण की दैनिक चुनौतियों का सामना करने में प्रोत्साहन और सहायता मिलती है।

माता–पिता के लिए सहायता – माता–पिता जो भोजन, कपड़े और आश्रय सहित अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संसाधनों की पहचान करने और उन तक पहुंचने में सक्षम हैं, अपने बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण को सुनिश्चित करते हैं। परिवारों को सशक्त बनाना परिवारों को आवाज और विकल्प देकर उन्हें मजबूत बनाता है। शक्ति–आधारित सेवाएं प्रत्येक परिवार की जरूरतों के इर्द–गिर्द केंद्रित होती हैं। प्रत्येक परिवार के सकारात्मक गुणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, कार्यक्रम परिवार का समर्थन करता है क्योंकि वे उन आदतों और व्यवहारों को पहचानते हैं और बदलते हैं जो स्वस्थ तरीके से कार्य करने की उनकी क्षमता को चुनौती देते हैं।

परिवारों को सशक्त बनाने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ :–

1. परिवारों के साथ सकारात्मक और सक्रिय बातचीत को बढ़ावा देना।

2. परिवार की पहचान की गई जरूरतों के जवाब में मदद की पेशकश करें।

3. वह सहायता प्रदान करें जो मानक हो।

4.ऐसे सुझाव दें जो परिवार को संसाधन जुटाने में तत्काल सफलता प्रदान करें।

5. जरूरतों को पूरा करने के प्रमुख तरीकों के रूप में परिवार के प्राकृतिक समर्थन नेटवर्क के उपयोग को बढ़ावा देना।

परिवारों को सशक्त बनाने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ :–

1. परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए सहयोग और संयुक्त जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देना।
2. परिवार को सहायता स्वीकार करने या अस्वीकार करने का निर्णय लेने की अनुमति दें।
3. पारस्परिक होने के लिए सहायता स्वीकार करें या अनुमति दें और ऐसा करने के अवसर प्रदान करें।
4. परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक स्वतंत्रता और कौशल और व्यवहार के अधिग्रहण को बढ़ावा देना।
5. व्यवहार परिवर्तन के लिए जिम्मेदार एक सक्रिय एजेंट के रूप में खुद को देखने के लिए परिवार के सदस्यों की क्षमता को बढ़ावा देना।

Unit :– 2.5 Partnering for interventional practices (इंटरवेंशनल प्रथाओं के लिए भागीदारी।)

विकलांगता में पारंपरिक प्रथाओं के लिए साझेदारी में विकलांग व्यक्तियों को व्यापक देखभाल और सहायता प्रदान करने के लिए अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों, देखभाल करने वालों और सामुदायिक संगठनों के साथ सहयोग करना शामिल है। यह दृष्टिकोण परिणामों में सुधार कर सकता है और विकलांग लोगों के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ा सकता है।

विकलांग व्यक्तियों के लिए हस्तक्षेप में भौतिक चिकित्सा, व्यावसायिक चिकित्सा, भाषण चिकित्सा, सहायक तकनीक और अन्य विशेष सेवाएं शामिल हो सकती हैं। विकलांगता के लिए पारंपरिक प्रथाओं में प्रभावी भागीदारी में विभिन्न सेटिंग्स में देखभाल और समर्थन का समन्वय करने के लिए स्वास्थ्य पेशेवरों की एक बहु–विषयक टीम के साथ काम करना शामिल हो सकता है।

विकलांगता के लिए पारंपरिक प्रथाओं में भागीदारी के प्रमुख घटकों में से एक बहु–विषयक टीम दृष्टिकोण है। इसमें विभिन्न सेटिंग्स में देखभाल और समर्थन का समन्वय करने के लिए भौतिक चिकित्सक, व्यावसायिक चिकित्सक, भाषण चिकित्सक और सहायक प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों जैसे कई स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ काम करना शामिल हो सकता है। यह टीम दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है कि देखभाल सुसंगत और समन्वित है, और विकलांग व्यक्तियों के लिए परिणामों को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

विकलांगता में पारंपरिक प्रथाओं के लिए भागीदारी में शिक्षा, प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करने के लिए देखभाल करने वालों के साथ काम करना भी शामिल है। देखभाल करने वाले विकलांग व्यक्तियों का समर्थन करने में

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और उनके साथ भागीदारी यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है कि देखभाल सुसंगत और व्यापक है। इसमें विशिष्ट हस्तक्षेपों या उपचारों पर शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना शामिल हो सकता है, साथ ही देखभाल करने वालों को अपनी आवश्यकताओं का प्रबंधन करने में मदद करने के लिए भावनात्मक समर्थन और संसाधन प्रदान करना शामिल हो सकता है।

स्वास्थ्य पेशेवरों और देखभाल करने वालों के साथ काम करने के अलावा, विकलांगता में पारंपरिक प्रथाओं के लिए भागीदारी में सामुदायिक संगठनों और हिमायत करने वाले समूहों के साथ काम करना शामिल हो सकता है। ये संगठन विकलांग व्यक्तियों और उनके परिवारों को संसाधन, शिक्षा और सहायता प्रदान कर सकते हैं, साथ ही समुदाय में समावेश और पहुंच को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं। सामुदायिक संगठन और हिमायत करने वाले समूह भी विकलांग व्यक्तियों की जरूरतों और चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं, और उनकी जरूरतों का समर्थन करने वाली नीतियों और पहलों को बढ़ावा देने के लिए काम कर सकते हैं।

विकलांगता में पारंपरिक प्रथाओं के लिए भागीदारी में शिक्षा, प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करने के लिए देखभाल करने वालों के साथ काम करना भी शामिल हो सकता है। देखभाल करने वाले विकलांग व्यक्तियों का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और उनके साथ भागीदारी यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है कि देखभाल सुसंगत और समन्वित है।

सामुदायिक संगठन और हिमायत करने वाले समूह भी अक्षमता में अंतःक्षेपी प्रथाओं के लिए भागीदारी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ये संगठन विकलांग व्यक्तियों और उनके परिवारों को संसाधन, शिक्षा और सहायता प्रदान कर सकते हैं, साथ ही समुदाय में समावेश और पहुंच को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

कुल मिलाकर, विकलांगता में पारंपरिक प्रथाओं के लिए भागीदारी के लिए कई सेटिंग्स और हितधारकों में एक समन्वित और सहयोगी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। यह दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है कि विकलांग व्यक्तियों को व्यापक देखभाल और सहायता प्राप्त होती है, और इससे बेहतर परिणाम और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।

Unit :– 3 Role of Family in Early Childhood Care and Education (ECCE) बचपन की देखभाल और शिक्षा में परिवार की भूमिका (ईसीसीई)

Unit :– 3.1 Parents as first teachers and family as first school.(प्रथम शिक्षक के रूप में माता–पिता और प्रथम विद्यालय के रूप में परिवार) – माता–पिता बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं और घर बच्चे की पहली कक्षा होती है। सीखने और विकास के प्रमुख संसाधनों के रूप में, माता–पिता बच्चे के सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास को आकार देने में मदद करते हैं ताकि वह स्कूल और उसके बाद भी आगे बढ़ सके। छात्रों की सफलता का समर्थन परिवारों, स्कूलों और समुदाय के बीच एक साथ काम करने के लिए एक साझा समझौते के साथ शुरू होता है और इसमें ऐसा करने के लिए प्रतिबद्ध कार्रवाई शामिल होती है।

जिस क्षण से आपका पहला बच्चा पैदा होता है, आप एक शिक्षक बन जाते हैं। हालांकि औपचारिक रूप से योग्य नहीं, आप इसे पसंद करते हैं या नहीं, आप तुरंत अपने बच्चे के पहले और सबसे प्रभावशाली कोच बन जाते हैं। पहले दिन से, आपका बच्चा जीवन में आपकी ओर बहुत अधिक देखेगा, और आप जो कहते हैं उससे अधिक आप जो करते हैं वह मायने रखता है। वे देखते हैं कि आप अपना पैसा कैसे खर्च करते हैं, आप दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि आप उनकी देखभाल कैसे करते हैं। वे आपके

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

कार्यों का उपयोग अपने आसपास की दुनिया को समझने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए कौशल विकसित करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में करेंगे।

अनुसंधान इंगित करता है कि औपचारिक शिक्षण की कोई भी मात्रा आपकी संतानों पर आपके प्रभाव की तुलना नहीं कर सकती है, जिसे आप प्रतिदिन पढ़ाते हैं – शब्द और उदाहरण के द्वारा। और, प्रारंभिक वर्षों के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चरण होने के साथ, आपके बच्चे की सुरक्षा की भावना, सामाजिक जागरूकता और सीखने में आत्मविश्वास विकसित करने के लिए, ऐसा करने का समय अब है। यहां हम पहले शिक्षकों के रूप में माता–पिता की भूमिका निभाने के महत्व के बारे में बात करते हैं और आप अपने बच्चे को एक शुरुआत कैसे दे सकते हैं। आपके बच्चे का पहला शिक्षक बनना जितना आसान लगता है, उससे कहीं अधिक आसान है, और इसके साथ बहुत बड़े लाभ भी मिलते हैं, जैसेः

सुरक्षित और भरोसेमंद अटैचमेंट विकसित करने में मदद करना :– जॉन बावल्बी, एक ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक और लगाव सिद्धांत के संस्थापक, कहते हैं कि माँ को पालने सेः बच्चे का लगाव – आप अपने बच्चे को जीवन के लिए एक इष्टतम आधार देते हैं। एक नींव जो न केवल विश्वास और सीखने की इच्छा पैदा करती है बल्कि उन्हें दूसरों के लिए आत्म–जागरूकता और विचार की स्वस्थ भावना भी देती है। लगाव का यह रूप आपके बच्चे को बाहरी दुनिया का पता लगाने के लिए एक सुरक्षित आधार प्रदान करने में मदद करता है, और यह उन्हें यह अनुमान लगाने में भी मदद करता है कि माता–पिता के रूप में, आप उनका समर्थन करने के लिए वहां मौजूद रहेंगे।

अध्ययन के दौरान उन्होंने ऐसे कई बच्चों की पहचान की जिन्होंने अपने माता–पिता के साथ सुरक्षित लगाव प्रदर्शित किया। उन्होंने इस लगाव के लिए बच्चों को स्कूल में जीवन में आसानी से समायोजित करने में सक्षम होने के लिए जिम्मेदार ठहराया। वही अध्ययन इंगित करता है कि घर पर स्थापित की तरह ही अनुमानित और सुसंगत दिनचर्या, एक बच्चे को प्यार, सुरक्षा और आश्वासन की भावना देती है और दूसरों से अच्छी तरह से मेलजोल और संबंध बनाने की क्षमता को प्रोत्साहित करती है। दूसरी ओर, एक असुरक्षित लगाव संबंध वह है जो सुरक्षा और समझ की आवश्यकता को पूरा करने में विफल रहता है, जिससे स्वयं के बारे में भ्रम पैदा होता है और बाद के जीवन में सीखने और दूसरों से संबंधित होने में कठिनाई होती है। प्रारंभिक सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद करता है।

(Helps develop early social skills) :–

- आपके साथ एक सुरक्षित लगाव बनाने के अलावा माता–पिता के रूप में, आपके बच्चे का पहला शिक्षक होने से सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद मिलती है।
- बच्चे नकल से सीखते हैं और इसमें सामाजिक परिस्थितियों में साथियों से सीखना शामिल हो सकता है, जैसे कि ''कक्षा'' में। लेकिन आपका घर परिणाम देने के लिए किसी भी औपचारिक स्कूल के कमरे जितना ही अच्छा है।
- कुछ माता–पिता मानते हैं कि वे व्यक्तित्व और व्यवहार के लिए जीन की तुलना में थोड़ा अधिक योगदान करते हैं, हालांकि, हाल के अध्ययनों से पुष्टि होती है कि घर में माता–पिता घर के बाहर नींव सीखने और सामाजिक समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- जिससे बच्चा अपनी भावनात्मक और शारीरिक जरूरतों को समझना सीखेगा, जिसे उत्तरदायी पालन–पोषण के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। हालांकि, दूसरी ओर, स्थितियों पर प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करना नकारात्मक सामाजिक व्यवहारों से जुड़ा हुआ है।
- आपका बच्चा अपना अनूठा व्यक्ति होगा। सामाजिक कौशल को प्रोत्साहित करने के लिए, एक आकार–फिट–सभी दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। अपने बच्चे के व्यक्तित्व, उनकी ताकत और कमजोरियों को ध्यान से देखकर अपने पालन–पोषण को ठीक करें। फिर व्यवहार नियंत्रण का स्तर, अनुशासन शैली, और स्वतंत्रता की डिग्री प्रदान करें जो प्यार और समर्थन दिखाते हुए उनके लिए सबसे अच्छा काम करता है।

मूल्यों और नैतिकता को स्थापित करने में मदद करता है (Helps establish values and morals) :–

- माँ और पिताजी, आप सभी नैतिक मूल्यों और दृष्टिकोणों के प्रमुख शिक्षक हैं जो आपके बच्चे और बच्चे बाद में प्रदर्शित करेंगे। यह आप ही हैं कि आपका बच्चा अपनी हर बात पर गौर करेगा।
- सम्मान, दया, ईमानदारी, साहस, दृढ़ता, आत्म–अनुशासन, करुणा और कई अन्य मूल्य घर से स्थापित किए जा सकते हैं।
- माता–पिता के रूप में, आपको अपने बच्चों में इस प्रकार के मूल्यों को स्थापित करना चाहिए और ऐसा करके आप उन्हें संभावित नकारात्मक सामाजिक प्रभावों से बचा सकते हैं। सम्मानजनक मूल्यों और नैतिकता का पोषण करके आप अपने बच्चे के लिए सही गलत को समझने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए आधार तैयार करेंगे।

प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मक कौशल विकसित करने में मदद करता है (Helps develop early literacy and numeracy skills) :– साक्षरता का महत्वपूर्ण कौशल बहुत कम उम्र में सीखा जाता है। तीन या चार साल तक आपका बच्चा बिना किसी औपचारिक शिक्षण के अपने आसपास बोली जाने वाली भाषा को समझ सकता है और उसका उपयोग कर सकता है। जन्म के समय से, अपने बच्चे से बात करना एक बड़ा प्रभाव डालता है, पहले बबल्स से बात करना और शब्दों का आदान–प्रदान करना भाषा के विकास के लिए महत्वपूर्ण है और आप इस सीखने के संवेदनशील समय का लाभ उठा सकते हैं,

अपने बच्चे को जोर से पढ़ना – पूरी किताब में शब्दों और प्रतीकों की ओर इशारा करना। अपने बच्चे की रुचि और सकारात्मक अनुभव को प्रोत्साहित करें।

उनसे हर चीज के बारे में बात करें और सवाल पूछें – आपके आस–पास से आपका बच्चा उन चीजों से जुड़े शब्दों को सीखेगा जो उन्हें और उनकी दुनिया से परिचित हैं। उदाहरण के लिए, घर में जो आप देखते हैं, कार में सवारी करते समय और दुकानों में खरीदारी करते समय नाम दें।

शोध से पता चलता है कि उपरोक्त को प्रोत्साहित करने से, आपके बच्चे की भाषा क्षमताओं में गंभीर रूप से वृद्धि होगी और यह सुनिश्चित होगा कि वे अच्छे पाठक और आत्मविश्वासी संचारक बनें।

भावनात्मक जागरूकता विकसित करने में मदद करता है (Helps develop emotional awareness) :–

- बच्चे आपके, अपने माता–पिता के माध्यम से अपनी भावनाओं को समझना और व्यक्त करना सीखेंगे।
- शिशुओं के रूप में, शैशवावस्था और उसके बाद तक – आपका बच्चा दर्द या तनाव महसूस होने पर भावनात्मक समर्थन के लिए आपकी ओर देखेगा। शिशु अवस्था के बाद, आपका बच्चा यह देखना शुरू कर

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

देगा कि आप अपनी भावनाओं को कैसे संभालते हैं, क्योंकि आपको उनका भावनात्मक आदर्श माना जाता है।

- उदाहरण के लिएः जब कुछ भावनाएँ उपयुक्त हों, तो उनकी भावनाओं को क्या कहें – खुश, उदास और दूसरों की भावनाओं का जवाब कैसे दें। यदि आप इन कौशलों को सिखाना शुरू कर सकते हैं, तो आप भावनात्मक रूप से स्वस्थ और नैतिक रूप से संवेदनशील बच्चों के विकास को प्रोत्साहित करेंगे।
- ठूंसइले अनुसंधान सकारात्मक परिणामों को दर्शाता है जो सुरक्षित जुड़ाव के परिणामस्वरूप बनते हैं और सुझाव देते हैं कि यह भावनात्मक स्थिरता, उच्च आत्म–सम्मान, स्वतंत्रता, सहानुभूति, करुणा और जीवन में बाद में लचीलापन की ओर जाता है।
- इसका मतलब माँ और पिताजी, यह है कि आपके बच्चे को जीवन के लिए तैयार करना – लंबी शिक्षा उसी क्षण से शुरू हो जाती है जब आप अस्पताल से उस मूत को घर लाते हैं और उनकी शिक्षा तब शुरू नहीं होती है जब वे किंडरगार्टन या औपचारिक कक्षा में जाते हैं। इसकी शुरुआत आपके घर से होती है।
- भले ही आप अपने बच्चे के अकादमिक करियर की पूरी जिम्मेदारी लें, फिर भी आपको एक शिक्षक, एक संरक्षक और मार्गदर्शक माना जाता है। आप अपने बच्चे और उनकी प्रारंभिक शिक्षा के लिए जो समय देते हैं वह मूल्यवान है।
- हर बार जब आप एबीसी गाते हैं या अपने बच्चे को उसके होमवर्क में मदद करते हैं, या उन्हें बाइक चलाना, खाना बनाना या कपड़े धोना सिखाते हैं – उन्हें शिक्षित करना है और घर पर सीखे गए सबक, अच्छे या बुरे के लिए हैं, जो चिपक जाते हैं। उन्हें बात बनाओ। आपके बच्चे किसी दिन इसकी सराहना करेंगे।
- परिवार न केवल समाजीकरण और नागरिकता की दृष्टि से, बल्कि सामान्य शिक्षा की दृष्टि से भी प्रथम पाठशाला है। एक सकारात्मक पारिवारिक वातावरण बच्चों को ऐसे उदाहरण देगा जिनका वे अनुसरण कर सकते हैं ताकि जब वे इस वातावरण को छोड़ दें तो दूसरों के साथ बेहतर संबंध बना सकें।

Unit :– 3.2 Role of family in developing and executing IFSP and IEPs (IFSP और IEPs के विकास और क्रियान्वयन में परिवार की भूमिका) – व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रमों (आईईपीएस) से परिचित होना काफी निराशाजनक हो सकता है और कभी–कभी इसमें शामिल विभिन्न चरणों और प्रक्रियाओं के कारण भारी भी पड़ सकता है। परिवार के सदस्यों के लिए, यह और भी कठिन हो सकता है क्योंकि कागजी कार्रवाई और बैठकों में अपरिचित भाषा, परिवर्णी शब्द और लक्ष्य निर्धारण उपाय शामिल हैं।

माता–पिता की भूमिका (The Parent's Role) :– आईईपी प्रक्रिया में माता–पिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे छात्र को एक व्यक्ति के रूप में समझने में विशेषज्ञ हैं, जो कक्षा में या कागज पर कैसे दिखाई देते हैं उससे अलग है। माता–पिता न केवल अपने बच्चे का समर्थन करने के लिए हैं, बल्कि टीम के सदस्य भी हैं जो बच्चे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हैं।

आईईपी प्रक्रिया के दौरान, माता–पिता की भूमिका हैः

- व्यक्तिगत कार्यक्रम के बारे में छात्र के साथ खुले तौर पर संवाद करें और आईईपी टीम के साथ एकजुट समर्थन दिखाएं।

- छात्र के व्यवहार, कमजोरियों, ताकत और रुचियों के बारे में जानकारी प्रदान करें ताकि टीम के सदस्य उन क्षेत्रों से अवगत हों जिनसे वह अपरिचित है।
- छात्र के स्व–विनियमन कौशल के बारे में विवरण प्रदान करें, जैसे कार्यों या लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए छात्र को किसी भी सहायता या संशोधन की आवश्यकता हो सकती है, या किसी भी सहायता की छात्र को स्कूल के बाद के लक्ष्यों तक पहुंचने की आवश्यकता हो सकती है।
- IEP योजना, संवाद और निर्णय लेने के सभी क्षेत्रों में एक प्रतिबद्ध समान भागीदार बनें।

आईईपीएस बनाने में समिति के सदस्यों और शैक्षिक निर्णय निर्माताओं के रूप में माता–पिता की भूमिका 1975 में सभी विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा अधिनियम द्वारा स्थापित की गई थी, जिसे अब विकलांग शिक्षा अधिनियम (आईडीईए) के रूप में जाना जाता है। भले ही माता–पिता की भागीदारी आईडिया की एक परिभाषित विशेषता है, कांग्रेस, 1997 के आईडिया के पुनः प्राधिकरण के हिस्से के रूप में, का मानना था कि माता–पिता की भागीदारी को मजबूत करने की आवश्यकता है। नतीजतन, उचित और व्यक्तिगत शैक्षिक प्रोग्रामिंग के लिए एक आवश्यक घटक के रूप में माता–पिता के अधिकार और जिम्मेदारियां फिर से सबसे आगे हैं, यह अनिवार्य है कि स्कूल बच्चों की शिक्षा के बारे में निर्णयों में सक्रिय माता–पिता की भागीदारी का अवसर प्रदान करें।

आईईपी प्रक्रिया में माता–पिता की भागीदारी के कई लाभ हैं:

- बच्चे के पर्यावरण के बारे में शिक्षक की समझ बढ़ाएँ।
- बच्चे की शैक्षिक सेटिंग के बारे में माता–पिता के ज्ञान में जोड़ें।
- माता–पिता और स्कूल के बीच संचार में सुधार।
- बच्चे के बारे में स्कूल की समझ बढ़ाएँ।
- इस संभावना को बढ़ाएँ कि घर और स्कूल के बीच बेहतर समझ के साथ, परस्पर सहमत शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जाएगा।

इंडिविजुअलाइज्ड फैमिली सर्विस प्लान (आईएफएसपी) :– एक प्रक्रिया और दस्तावेज दोनों है, जिसका उद्देश्य एक समुदाय में परिवारों और पेशेवरों को उनके संयुक्त प्रयासों में जन्म से लेकर तीन साल की उम्र तक एक छोटे बच्चे की विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद करना है। बच्चे के पहले IFSP को विकसित करने के लिए बैठक में निम्नलिखित प्रतिभागी शामिल होने चाहिए:

- बच्चे के माता–पिता या अभिभावक।
- माता–पिता के अनुरोध के अनुसार परिवार के अन्य सदस्य, यदि संभव हो तो ऐसा करना।
- एक वकील या परिवार के बाहर का व्यक्ति, यदि माता–पिता अनुरोध करते हैं कि व्यक्ति भाग लेता है।
- IFSP को लागू करने के लिए जिम्मेदार होने के लिए सिस्टम द्वारा नामित सेवा समन्वयक।
- वे व्यक्ति जो इस भाग के तहत बच्चे को शीघ्र हस्तक्षेप सेवाएं प्रदान करेंगे। या परिवार (जैसा उपयुक्त हो)।

परिवार को लाभ (Benefits to the Family) :–

- IFSP परिवारों को आश्वासन देता है।
- बच्चे और परिवार की बदलती जरूरतों पर चर्चा और दस्तावेजीकरण के लिए एक पूर्वानुमेय प्रक्रिया।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- ''परिवार–केंद्रित सेवाएं'' जिसमें बच्चे की जरूरतें और बड़े लोगों की जरूरतें दोनों होती हैं, परिवार माना जाएगा।
- परिवार के लिए सबसे महत्वपूर्ण समझे जाने वाले परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना।
- ''जीवित'' दस्तावेज जो बच्चे और परिवार की जरूरतों के अनुसार बदलता और बढ़ता है।
- परिवार और उनके बच्चे की मदद करने के लिए एक समुदाय में उपलब्ध शैक्षिक, चिकित्सा और सामाजिक सेवाओं तक पहुंच।
- शारीरिक, व्यावसायिक और भाषण चिकित्सा, सामाजिक कार्य, नर्सिंग, पोषण, ऑडियोलॉजी, मनोविज्ञान, बाल विकास और शिक्षा सहित कई विषयों के पेशेवरों की विशेषज्ञता।
- व्यक्तिगत परिवार के लिए आकर्षक और उपयोगी तरीके से एजेंसियों और पेशेवरों के बीच उन विशेष सेवाओं का समन्वय।

प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में माता–पिता की भागीदारी एक बच्चे के कक्षा में अनुभव को घर में होने वाली वास्तविक दुनिया की गतिविधियों तक बढ़ा सकती है। एक माता–पिता जो समझते हैं कि उनका बच्चा प्रीस्कूल में क्या काम कर रहा है, उन्हें अपने बच्चे की योग्यता की बेहतर समझ है और आत्मविश्वास और क्षमता में सुधार के लिए उन्हें किन क्षेत्रों में काम करने की आवश्यकता है।

प्रारंभिक बचपन के शिक्षकों के लिए सबसे कठिन चुनौतियों में से एक यह पता लगाना है कि माता–पिता को अपने बच्चे की शिक्षा में बेहतर तरीके से कैसे शामिल किया जाए। अपने चाइल्डकैअर सेंटर और माता–पिता के बीच संचार की अच्छी लाइनें स्थापित करके, साथ ही माता–पिता को अपने बच्चे की शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में शामिल करने का एक मजबूत प्रयास करके, आप उनकी सीखने की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

Unit :– 3.3 Family's role in developing foundational literacy in young children (छोटे बच्चों में आधारभूत साक्षरता विकसित करने में परिवार की भूमिका) – जिस क्षण से बच्चे पैदा होते हैं, वे अपने माता–पिता के साथ अपने संबंधों के माध्यम से साक्षरता कौशल विकसित करना शुरू कर देते हैं। अपने शिशु या बच्चे के साथ बात करने, पढ़ने, गाने और खेलने से, आप वह आधार प्रदान करते हैं जो आपके बच्चे को भाषा और पठन कौशल विकसित करने की आवश्यकता होगी।

प्रारंभिक साक्षरता कौशल में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है। विकलांग या विकासात्मक देरी वाले बच्चों के लिए, वे कौशल आमतौर पर विकासशील बच्चों की तुलना में अधिक धीरे–धीरे परिपक्व हो सकते हैं। आपके बच्चे की क्षमता का स्तर जो भी हो, यहां कुछ चीजें हैं जो आप अपने बच्चे को उन महत्वपूर्ण कौशलों को विकसित करने में मदद करने के लिए हर दिन कर सकते हैं।

सुनने को प्रोत्साहित करें (Encourage Listening) :–

- अपने शिशु के सहवास का जवाब दें।
- शिशुओं और बच्चों से बात करें।
- बच्चे के वातावरण (यानी, शरीर के अंगों के रंग, कपड़े, भोजन, खिलौने) में चीजों का नामकरण करके शब्दावली बढ़ाएं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- प्रतिदिन गीत गाएं और तुकबंदी करें।
- कहानियां पढ़ें और दृष्टांतों के बारे में बात करें।
- संगीत सुनें, और ताली बजाएं या ताली बजाएं।

बोलने को प्रोत्साहित करें (Encourage Speaking) :–

- छोटे बच्चों को यह पूछने के लिए प्रोत्साहित करें कि वे क्या चाहते हैं, इसे इंगित न करें बच्चों से उनके दिन के बारे में प्रश्न पूछें और उन कहानियों के बारे में जो आप उन्हें पढ़ते हैं ।
- बच्चों को शिष्टाचार और अभिवादन का उपयोग करना सिखाएं (यानी, कृपया, धन्यवाद, नमस्ते, अलविदा)।
- एक साथ गाएं और तुकबंदी कहें।
- अपने बच्चे को रोजाना पढ़कर शब्दावली बढ़ाएं।
- बच्चों को क्या कहना है, इसमें रुचि दिखाएं।
- अपने बच्चे के साथ कहानी सुनाने का समय साझा करें।

पढ़ने को प्रोत्साहित करें (Encourage Reading) :–

- अपने बच्चे को पुस्तक अवधारणा के बारे में सिखाएं (अर्थात, दाईं ओर–ऊपर, आगे से पीछे, एक बार में एक पृष्ठ पलटें, बाएं से दाएं पढ़ें, शुरुआत से अंत तक)।
- अपने बच्चों के जन्म के समय से उन्हें प्रतिदिन पढ़ें।
- क्या आपके बच्चे ने आपको एक कहानी ''पढ़'' दी है।
- पढ़ें, फिर दोबारा पढ़ें, कहानी जितनी बार आपका बच्चा अनुरोध करता है, अपने बच्चों के नाम उनके सामान पर रखें ताकि वे ''उनके नाम पढ़ना सीखें और समझें कि स्क्वीगल्स (अक्षर) कुछ महत्वपूर्ण कहते हैं –
- बच्चों की विभिन्न प्रकार की पुस्तकों को सुलभ रखें।
- अपने स्थानीय पुस्तकालय या किताबों की दुकान पर अपने बच्चों को ढेर सारी पुस्तकों से अवगत कराएँ।
- दृष्टिबाधित बच्चों के साथ ब्रेल या बात करने वाली किताबों का प्रयोग करें।
- किताबों में चित्रों के बारे में बात करें।

लेखन को प्रोत्साहित करें (Encourage Writing) :–

- खिलौनों के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करें जो ग्रैस्प और ठीक मोटर विकास विकसित करते हैं, (यानी, पहेली, मिट्टी, मोती)।
- छोटे बच्चों को विभिन्न उपकरणों (जैसे क्रेयॉन, पेंसिल, मार्कर, पेन, पेंटब्रश) से चित्र बनाने या लिखने के दैनिक अवसर प्रदान करें।
- ड्राइंग, कलरिंग और स्क्रिबल राइटिंग के महत्व को पहचानें।
- बच्चों को रंग, आकार, आकार, अक्षरों के नाम सीखने में मदद करें।
- ठीक मोटर अक्षमता वाले बच्चों के लिए अनुकूली लेखन उपकरण, कंप्यूटर या अन्य आवास प्रदान करें।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

दैनिक गतिविधियां साक्षरता को बढ़ावा देती है (Daily Activities Promote Literacy) :– इन गतिविधियों को स्वाभाविक रूप से उन चीजों में शामिल कर सकते हैं जो आप अपने छोटे बच्चे के साथ प्रतिदिन करते हैं। साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए दैनिक दिनचर्या को एक अच्छा समय बनाने के लिए यहां कुछ उपाय दिए गए हैं:

- **ड्रेसिंग – अनड्रेसिंग:** शरीर के अंगों, कपड़ों, रंगों, संख्याओं, अवधारणाओं जैसे कि नरम या खरोंच या बड़ा या छोटा नाम।
- **भोजन का समय:** खाद्य पदार्थों के नाम बताएं, भोजन कैसे बढ़ता है, भोजन के रंग, थाली में सब्जियों की संख्या, गर्मध्ठंडा या मीठाध्खट्टा जैसी अवधारणाएं।
- **डायपरिंग:** अपने बच्चे को बताएं कि आप क्या कर रहे हैं, उन वस्तुओं के नाम बताएं जिनका आप उपयोग कर रहे हैं, जैसे डायपर, मलहम, पोंछे।
- **नहाने का समय:** कहानियां सुनाएं, गाने गाएं, तुकबंदी कहें, और साक्षरता से संबंधित कुछ स्नान खिलौने हों – विनाइल किताबें, टब अक्षर, आकार, संख्याएं।
- **सोने का समय:** हर रात कहानियाँ सुनाएँ या पढ़ें, दृष्टांतों के बारे में बात करें, बड़े बच्चों से पूछें कि उन्हें क्या लगता है कि कहानी में आगे क्या होगा।
- टीवी लिस्टिंग से कार्यक्रमों के चयन में बच्चों को शामिल करें (माता–पिता के मार्गदर्शन के साथ)
- अपने बच्चों के साथ बैठकर स्कूल में उनके काम को देखें और पढ़ें।

Unit :– 3.4 Supporting learning at home, school and in after school activities - (घर, स्कूल और स्कूल के बाद की गतिविधियों में सीखने में सहायता करना) – माता–पिता बच्चों के पहले शिक्षक हैं, और कई माता–पिता अब उस स्थिति में हैं – शाब्दिक रूप से। नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं कि कैसे माता–पिता घर पर रहते हुए अपने बच्चों की शिक्षा में सहायता कर सकते हैं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मूल्यवान शिक्षा का 'कक्षा' में होना जरूरी नहीं है और छात्रों को महत्वपूर्ण कौशल सिखाने के लिए 'स्कूल' में होना जरूरी नहीं है।

जटिल जरूरतों वाले अपने बच्चे की सहायता करना (Supporting your child with complex need) :– जटिल जरूरतों वाले बच्चों को इस अचानक परिवर्तन से निपटने में विशेष रूप से कठिन समय हो सकता है, और यह भी बहुत से माता–पिता से पूछता है। सीखने के लिए ध्यान सभी के लिए अलग–अलग होना चाहिए और कुछ के लिए, यह सीखने पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है कि नए सामान्य को समायोजित करना, सरल दिनचर्या का पालन करना, भावनाओं को प्रबंधित करना, स्व–नियमन रणनीतियों को सीखना, या जीवन कौशल का अभ्यास करना जैसे कि जूते बांधना, खाना बनाना , या साधारण घरेलू काम, यह सब महत्वपूर्ण सीख है, इसलिए माता–पिता को जो कुछ वे कर सकते हैं उसे अपनाना चाहिए और इसे एक समय में एक कदम उठाना चाहिए।

एक शेड्यूल बनाएं / एक रूटीन बनाएं। (Make a schedule / Have a routine) – रूटीन ज्यादातर लोगों के लिए मददगार होता है। बच्चों को इन अनिश्चित समय में सुरक्षित और सुरक्षित महसूस करने की अधिक संभावना होगी यदि उनके सीखने के लिए एक सुसंगत योजना है जिसे बनाने में उन्होंने मदद की है। माता–पिता को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अपने बच्चों के साथ एक कार्यक्रम बनाएं और इसे एक दृश्य क्षेत्र में पोस्ट करें। इस तरह सबकी एक जैसी उम्मीदें हैं। हालाँकि, माता–पिता को यह महसूस नहीं करना चाहिए कि उनका पूरा कार्यक्रम केवल स्कूल के काम पर केंद्रित होना चाहिए। माता–पिता को भी विश्राम और पारिवारिक समय की योजना बनानी चाहिए।

UP066-Usha charitable Trust, Lucknow

सीखने के लिए जगह बनाए (Make space for learning) :– सीखने की गतिविधियों को व्यवस्थित करने का प्रयास करते समय सभी घर अलग–अलग होते हैं और प्रत्येक के सामने चुनौतियां होती हैं। जब और जहां संभव हो, माता–पिता को उन क्षेत्रों की पहचान करनी चाहिए जहां बच्चे सर्वोत्तम संभव तरीके से सीख सकते हैं, जैसे कि खाना पकाने के लिए रसोई का उपयोग करना, ड्राइंग या लिखने के लिए एक टेबल, यांत्रिकी की खोज के लिए एक गैरेज, पढ़ने के लिए एक आरामदायक कुर्सी / फर्श, और बाहर की खोज के लिए यार्ड या भूमि। यदि संभव हो, तो माता–पिता को किसी भी उपलब्ध तकनीक जैसे वाई–फाई एक्सेस, शिक्षकों के साथ संवाद करने के लिए ईमेल पते, और स्क्रीन टाइम, इंस्टेंट मैसेजिंग, वीडियो कॉल और ऑनलाइन गेम के आसपास उचित नियम निर्धारित करने का प्रयास करना चाहिए।

इंटरनेट सुरक्षा (Internet safety) :– माता–पिता को यह समझना चाहिए कि इस अभूतपूर्व समय के दौरान बच्चों का स्क्रीन टाइम बढ़ाना ठीक हैय हालांकि, उन्हें अभी भी इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि उनके बच्चे ऑनलाइन क्या कर रहे हैं और सुनिश्चित करें कि वे बुनियादी इंटरनेट सुरक्षा नियमों को समझते हैं।

घर पर छात्र सीखने का समर्थन कैसे करें (How to Support Student Learning at Home) :– माता–पिता बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं और घर बच्चे की पहली कक्षा होती है। सीखने और विकास के प्रमुख संसाधनों के रूप में, माता–पिता बच्चे के सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास को आकार देने में मदद करते हैं ताकि वह स्कूल और उसके बाद भी आगे बढ़ सके। छात्रों की सफलता का समर्थन परिवारों, स्कूलों और समुदाय के बीच एक साथ काम करने के लिए एक साझा समझौते के साथ शुरू होता है और इसमें ऐसा करने के लिए प्रतिबद्ध कार्रवाई शामिल होती है।

माता–पिता के लिए 10 टिप्स (10 Tips for Parents) – माता–पिता के रूप में, आप इस महत्वपूर्ण परिवार–विद्यालय को सुदृढ़ करने के लिए घर पर अपनी भूमिका निभा सकते हैं। साझेदारी । अपने बच्चों को ट्रैक पर रहने और उनके सीखने के अवसरों का विस्तार करने के लिए स्कूल की तैयारी के लिए तैयार करने में मदद करने के लिए।

- स्वस्थ खान–पान और सोने की आदतों सहित दैनिक पारिवारिक दिनचर्या स्थापित करें।
- होमवर्क के लिए घर पर जगह और समय दें।
- असाइनमेंट, होमवर्क और प्रोजेक्ट्स की जांच करें।
- अपने बच्चे के साथ उसकी गतिविधियों के बारे में हर दिन बात करें।
- अपने बच्चे को पढ़कर और खुद पढ़कर साक्षरता को बढ़ावा दें।
- टीवी देखने, गेमिंग, सोशल मीडिया और कंप्यूटर समय को सीमित और मॉनिटर करें।
- अपने बच्चे के सीखने के लिए उच्च उम्मीदों और मानकों को व्यक्त करें।
- माता–पिता–शिक्षक सम्मेलनों, ओपन हाउस और बैक–टू–स्कूल कार्यक्रमों में भाग लें।
- जो आपके बच्चे की शिक्षा को प्रभावित करते हैं।
- पुस्तकालय, संग्रहालय, चिड़ियाघर या थिएटर में जाकर सामुदायिक संसाधनों का लाभ उठाएं और स्कूल के बाद के क्लबों, खेल और कला गतिविधियों में भागीदारी को प्रोत्साहित करें।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

व्यस्त माता–पिता छात्रों और स्कूलों को सफल होने में मदद करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक हैं। परिवारों, स्कूलों और समुदायों के साथ मिलकर काम करने से, छात्रों की उपलब्धि में वृद्धि होती है और बच्चे स्कूल में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार होते हैं।

Unit :– 3.5 Role of family in facilitating inclusive education (समावेशी शिक्षा को सुगम बनाने में परिवार की भूमिका) – यह एक स्वीकृत धारणा है कि हर बच्चा हर दूसरे बच्चे की तरह होता है और हर बच्चा हर दूसरे बच्चे से अलग होता है। हर बच्चा अपने तरीके से अनोखा होता है। कुछ उज्ज्वल हैं, कुछ सुस्त हैं। लेकिन इन मतभेदों के बावजूद, सभी को अपनी क्षमता विकसित करने का समान अधिकार है। समावेशी शिक्षा विकलांग बच्चों के लिए अतिरिक्त सहायता के प्रावधान के साथ नियमित कक्षाओं में विकलांग बच्चों को गैर–विकलांग बच्चों के साथ एकीकृत करके सभी विकलांग छात्रों के अधिकारों की रक्षा करती है। समावेशन की सफलता को निर्धारित करने वाले कई कारकों में से एक परिवार का समर्थन और भागीदारी है। माता–पिता अपने बच्चों के पहले शिक्षक के रूप में जाने जाते हैं और वे जीवन भर अपने बच्चों के सीखने और विकास को प्रभावित करते रहते हैं। परिवार की सामाजिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, परिवार की भागीदारी छात्र के सीखने पर एक बड़ा प्रभाव डाल सकती है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि माता–पिता छात्र के पहले शिक्षक होते हैं जो उन्हें हर तरह से शिक्षित करते हैं, इसलिए आज की आवश्यकता यह है कि विकलांग बच्चों के माता–पिता का कहना है कि विकलांग बच्चों को शिक्षा कैसे प्रदान की जानी चाहिए। समावेशी शिक्षा नीति के कार्यान्वयन की योजना में माता–पिता को शामिल करना आवश्यक है। चूंकि माता–पिता यह नहीं समझते हैं कि उनसे क्या आवश्यक है। वे हीन महसूस करते हैं और समावेशी शिक्षा नीति (आईईपी) के कार्यान्वयन में उनकी भूमिका को नहीं समझते हैं।

EENET (एनेबलिंग एजुकेशन नेटवर्क) की स्थापना अप्रैल 1997 में समावेशी शिक्षा व्यवसायियों की सूचना आवश्यकताओं के जवाब में की गई थी, विशेष रूप से अफ्रीका और एशिया में। EENET पढ़ने में आसान और प्रासंगिक चर्चा दस्तावेजों और प्रशिक्षण सामग्री को बढ़ावा देता है। यह मानता है कि शिक्षा औपचारिक स्कूली शिक्षा से कहीं अधिक व्यापक है, और केवल औपचारिक कक्षा की चार दीवारों के भीतर ही नहीं होनी चाहिए। सभी बच्चों के शैक्षिक समावेश के लिए घर, परिवार और शिक्षा की पारंपरिक और अनौपचारिक प्रणाली आवश्यक है। विकलांग बच्चों के परिवार के सदस्यों के पास अक्सर पेशेवरों को पढ़ाने के लिए बहुत कुछ होता है क्योंकि उन्हें अपने बच्चे और उनकी विशेष हानि का घनिष्ठ ज्ञान होता है। इसी तरह अन्य हाशिए के समूहों के परिवारों के पास शिक्षकों को उनके जीवन के तरीके और विश्वास प्रणालियों के बारे में सिखाने के लिए बहुत कुछ है। औपचारिक शिक्षा में अधिक परिवार और समुदाय की भागीदारी समावेशन प्रक्रिया के लिए आवश्यक है।

समावेशी शिक्षा सेवाएं विकलांग बच्चों को अपने परिवार के साथ रहने और अन्य सभी बच्चों की तरह निकटतम स्कूल जाने की अनुमति देती हैं। यह परिस्थिति उनके व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। एक विकलांग बच्चे के सामान्य विकास में बाधा डालने से विकलांगता की तुलना में कहीं अधिक गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इस संदर्भ में, माता–पिता की भूमिका पर जोर देना महत्वपूर्ण है। उन्हें अपने बच्चे से संबंधित सभी निर्णय लेने में शामिल होने का अधिकार है। उन्हें शिक्षा प्रक्रिया में भागीदार के रूप में देखा जाना चाहिए। जहां ऐसा सहयोग होता है वहां माता–पिता शिक्षकों और स्कूलों के लिए बहुत महत्वपूर्ण संसाधन पाए गए हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

माता–पिता को शिक्षकों और अन्य पेशेवरों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए भी प्रशिक्षित किया गया था। उन्हें अब विश्वास हो गया है कि विकलांग बच्चों के माता–पिता होने का उनका अनुभव अत्यंत मूल्यवान है। उन्होंने विकलांग बच्चों के माता–पिता बनने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया, और उन्हें नहीं लगता कि शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण से लाभ होगा वे प्रशिक्षण के लिए एक समस्या आधारित दृष्टिकोण पसंद करते हैं और मंत्रालय के कर्मचारियों के साथ मिलकर वे स्कूल में शिक्षकों को सलाह देने में सक्षम हैं स्थापना । किसी भी शिक्षक को किसी विशेष हानि या बढ़े हुए वेतन में श्विशेषश विशेषज्ञता नहीं है। विकलांग बच्चों को शामिल करना सुनिश्चित करने के लिए सभी शिक्षक जिम्मेदार हैं। पायलट स्कूलों में शिक्षक, माता–पिता के साथ, समाज में समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक प्रमुख संसाधन हैं।

Unit :– 4 Community for Disability Rehabilitation

Unit :– 4.1 Concept and types of communities (समुदायों की अवधारणा और प्रकार)

– समुदाय व्यक्तियों का वह समूह है जिसमें उनका सामान्य जीवन व्यतीत होता है। समुदाय के निर्माण के लिए भू–भाग तथा इसमें रहने वाले व्यक्तियों में सामुदायिक भावना होना अनिवार्य है।

समुदाय का अर्थ – समुदाय शब्द लैटिन भाषा के (com) तथा 'Munis' शब्दों से बना है। बवउ का अर्थ हैं Together अर्थात एक साथ तथा Munis का अर्थ Serving अर्थात सेवा करना। समुदाय का अर्थ एक साथ मिलकर सेवा करना है। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि व्यक्तियों का ऐसा समूह जिसमें परस्पर मिलकर रहने की भावना होती है तथा परस्पर सहयोग द्वारा अपने अधिकारों का उपयोग करता है, समुदाय कहलाता है।

समुदाय की परिभाषा – विभिन्न विद्वानों समुदाय की परिभाषायें प्रस्तुत की जा रही हैं–

मैकाइवर के अनुसार – समुदाय सामाजिक जीवन के उस क्षेत्र को कहते है, जिसे सामाजिक सम्बन्ध अथवा सामंजस्य की कुछ मात्रा द्वारा पहचाना जा सके।''

आगबर्न एंव न्यूमेयर के अनुसार, ''समुदाय व्यक्तियों का एक समूह है जो एक सन्निकट भौगोलिक क्षेत्र में रहता हो, जिसकी गतितिधियों एवं हितों के समान केन्द्र हों तथा जो जीवन के प्रमुख कार्यों में इकट्ठे मिलकर कार्य करते हों।''

बोगार्डस के अनुसार, ''समुदाय एक सामाजिक समूह है जिसमें हम भावना की कुछ मात्रा हो तथा एक निश्चित क्षेत्र में रहता हो।''

आगबर्न एवं निमकॉफ के अनुसार, '' समुदाय किसी सीमित क्षेत्र के भीतर सामाजिक जीवन का पूर्ण संगठन हैं।

डेविस के अनुसार ''समुदाय एक सबसे छोटा क्षेत्रीय समूह है जिसके अन्तगर्त सामाजिक जीवन के समस्त पहलुओं का समावेश हो सकता हैं''।

समुदाय के प्रकार – समुदाय के प्रकार समुदाय के दो प्रकार बताये गये हैं :–

- ग्रामीण समुदाय
- नगरीय समुदाय

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

1. ग्रामीण समुदाय – प्रारम्भिक काल से ही मानव जीवन का निवास स्थान ग्रामीण समुदाय रहा है। धीरे–धीरे एक ऐसा समय आया जब हमारी ग्रामीण जनसंख्या चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी। आज ग्रामीण समुदाय के बदलते परिवेष में ग्रामीण समुदाय को परिभाषित करना कठिन है ।

ग्रामीण समुदाय की विशेषताएं –

1. कृषि व्यवसाय – ग्रामीण में रहने वाले ज्यादातर ग्रामवासी का खेती योग्य जमीन पर स्वामित्व होता है, खेती करना होता है।

2. **प्राकृतिक निकटता –** सभी जानते हैं कि खेती का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है ग्रामीण जीवन प्रकृति पर आश्रित रहता है।

3.**जातिवाद एवं धर्म का अधिक महत्व** – ग्रामीण समुदाय में अधिकाधिक लोगों की जातिवाद, धर्मवाद में अटूट श्रद्धा है। ग्रामीण समाज में छुआछूत व संकीर्णता पर विशेष बल दिया जाता है।

4.संयुक्त परिवार – ग्रामीण समुदाय में संयुक्त परिवार का अपना विशेष महत्व है। परिवार का मुखिया एवं बड़े–बूढ़े सदस्य इसे अपना सम्मान समझकर परिवार की एकता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

5.सामुदायिक भावना – ग्रामीण समुदाय की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनमें व्याप्त सामुदायिक भावना ग्रामीण समुदायों के सदस्यों में व्यक्तिगत निर्भरता के स्थान पर सामुदायिक निर्भरता अधिक पाई जाती है। इसलिए लोग एक दूसरे पर आश्रित होते हैं ग्रामीण समुदाय के एक सीमित क्षेत्र में बसने के कारण सदस्यों की अपनी समीपता बढ़ जाती है उनमें स्वभाव हम भावना का विकास हो जाता है। जिसे सामुदायिक भावना का नाम लिया जाता है।

6.धर्म एवं परम्परागत बातों में अधिक विश्वास – ग्रामीण लोग धर्म पुरानी परम्पराओं एवं रूढ़ियों में विश्वास करते हैं। तथा उनका जीवन सामुदायिक व्यवहार, धार्मिक नियमों एवं परम्पराओं से प्रभावित होता है।

2. नगरीय समुदाय – नगरीय समुदाय का अर्थ–नगरीय शब्द नगर से बना है जिसका अर्थ नगरों से सम्बन्धित है। जैसे शहरी समुदाय को एक सूत्र में बांधना अत्यन्त कठिन है। यदपि हम नगरीय समुदाय को देखते हैं, वहां के विचारों से पूर्ण अवगत हैं लेकिन उसे परिभाषित करना आसान नहीं है।

नगरीय समुदाय की विशेषताएं – नगरीय समुदाय को स्पष्ट करने के लिये आवश्यक है कि इसकी कुछ प्रमुख विशेषताओं की चर्चा की जाये जिससे सम्बन्धित प्रत्येक पक्ष सामने आकर नगरीय समुदाय को चित्रित कर सके। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं।

1.जनसंख्या का अधिक घनत्व – रोजगार की तलाश में गाँव से शिक्षित एवं अशिक्षित बेरोजगार व्यक्ति शहर में आते हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण आज सीमित जमीन में लोगों को जीवन निवार्ह करना कठिन पड़ रहा है।

2.विभिन्न संस्कृतियों का केन्द्र – कोई नगर किसी एक विशेष संस्कृति के जन समुदाय के लिये अशिक्षित नहीं होता। इसलिये देश के विभिन्न गाँवों से लोग नगर में आते हैं और वहीं बस जाते है। ये लोग विभिन्न रीति रिवाजों में विश्वास करते हैं तथा उन्हें मानते हैं।

3.अन्ध विश्वासों में कमी – नगरीय समुदाय में विकास के साधन एवं सुविधाओं की उपलब्धता के साथ–साथ यहां शिक्षा और सामाजिक बोध ग्रामीण समुदाय से अधिक पाया जाता है। यहां के लोगों का पुराने अन्धविश्वासों एवं रुढ़ियों में कम विश्वास होगा।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

4.वर्ग अतिवाद – नगरीय समुदाय में धनियों के धनी और गरीबों में गरीब वर्ग के लोग पाये जाते हैं अर्थात यहाँ भव्य कोठियों के रहने वाले, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले तथा दूसरे तरफ मकानों के आभाव में गरीब एवं कमजोर सड़क की पटरियों पर सोने वाले, भरपेट भोजन न नसीब होने वाले लोग भी निवास करते हैं।

5.श्रम विभाजन – नगरीय समुदाय में अनेक व्यवसाय वाले लोग होते हैं। जहाँ ग्रामीण समुदाय में अधिकाधिक लोगों का जीवन कृशि एव उससे सम्बन्धित कार्यों पर निर्भर होता है वहीं दूसरी तरफ नगरीय समुदाय में व्यापार–व्यवसाय, नौकरी, अध्ययन् आदि पर लोग का जीवन निर्भर करता है।

6.एकाकी परिवार की महत्ता – नगरीय समुदाय में उच्च जीवन स्तर की आकांक्षा के फलस्वरूप संयुक्त परिवार की जिम्मेदारियाँ वहन करना कठिनतम साबित होता है। शहरी समुदाय में एकाकी परिवार का बाहुल्य होता है।

Unit :– 4.2 Role of community in prevention early identification, and intervention of disability (रोकथाम में समुदाय की भूमिका प्रारंभिक पहचान, और विकलांगता के हस्तक्षेप) – समुदाय शब्द विकलांग व्यक्तियों सहित प्रत्येक सदस्य के महत्व को बताता है जैसा कि हमने देखा है कि एक समुदाय के अस्तित्व से किसी भी जाति, संस्कृति, पृष्ठभूमि और धर्म से आने वाले लोगों के बीच अधिक परिवर्तन की अनुमति मिलती है। विषय पर प्रकाश डालने के लिए, हमें शब्दावली की गतिशीलता को समझने में सक्षम होना चाहिएरू समुदाय। यह बुनियादी बुनियादी बातों और मानदंडों, धर्म, पहचान और मूल्यों को शामिल करने वाले लोगों की आपसी समझ के कारण मौजूद है।

अल्बर्ट श्विट्जर के रूप में, एक फ्रांसीसी–जर्मन धर्मशास्त्री उद्धरण :– मानव जीवन का उद्देश्य सेवा करना है, और करुणा और दूसरों की मदद करने की इच्छा दिखाना है। "मौलिक रूप से, यह हमारा महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि हम दूसरों को आराम पाने, स्नेह दिखाने और विशेष जरूरतों के साथ या बिना प्रत्येक व्यक्ति की सेवा करने दें। इसके अलावा, समुदाय के भीतर और तुच्छ दृष्टिकोण एक उत्पादक और कठोर घटना को विरासत में मिला है।

एक समुदाय से बने विकलांग व्यक्ति को आसानी से विस्तृत किया जा सकता है यदि हम केवल इरादे और समझ के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने पर जोर देते हैं, सबसे पहले एक बैंड बनाने के महत्व ने व्यक्तियों को विकलांग व्यक्तियों के साथ विस्तृत और सहानुभूति करने की अनुमति दी है, जो इस प्रकार स्वचालित रूप से मूल्य और अपनेपन की भावना पैदा करता है। इसके विपरीत, एक व्यथित विकलांग व्यक्ति उत्पादक नहीं हो पाएगा यदि उसे अकेला छोड़ दिया गया है, इसलिए एक कनेक्टिविटी ब्रिज बनाने से समुदाय के भीतर प्रत्येक व्यक्ति की समानताएं और अंतर का पता लगाया जाएगा।.

चोट के कारण होने वाली विकलांगताएं एलन, सैद्धांतिक रूप से, पूरी तरह से रोके जाने योग्य हैं। वास्तविकता यह है कि कुछ दुर्घटनाएं होंगी, चाहे कितनी भी सावधान, या अच्छी तरह से सूचित, जनसंख्या। दुर्घटना से संबंधित चोटें निवारक प्रयासों के लिए एक प्रमुख क्षेत्र हैं। यदि यहां चोट की दर यू.एस. के समान है, तो इनमें से 5 मिलियन कनाडाई घायल होंगे, इनमें से लगभग 130,000 को सिर में चोट लगी होगी और 7000 को ष्मध्यम से गंभीर दर्दनाक मस्तिष्क की चोट" होगी।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

कई विकासात्मक अक्षमताओं को पूरी तरह से रोका जा सकता है। जो सभी प्रदूषकों से जुड़े हैं, उन्हें पर्यावरण की सफाई के माध्यम से रोका जा सकता है अभाव के कारण विकास में देरी एक ऐसे समाज में नहीं होगी, जो अपने सभी बच्चों के लिए एक कथात्मक वातावरण का सामना कर रहा हो।

इन सभी प्लेटफार्मों की सामान्य विचारधारा विकलांग व्यक्तियों के लिए अपनेपन की भावना प्रदान करना है जहां वे अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को एक सुरक्षित, आरामदायक और मैत्रीपूर्ण वातावरण में ऑनलाइन साझा कर सकते हैं।

एक सहयोगी समुदाय की दिशा में एक बड़ा कदम विकलांग व्यक्तियों को शामिल करने की जिम्मेदारी लेने वाले प्रशिक्षित शिक्षकों के साथ प्रदान किया जाना है। एक समावेशी शिक्षा में एक प्रशिक्षित शिक्षक का महत्व काफी है और विकलांग व्यक्ति के लिए अतिरिक्त ज्ञान और मौन की भावना से भरकर बेहतर लाल प्राप्त करने की आवश्यकता है। अधिकारियों द्वारा शिक्षकों के सही समय की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए, बल्कि प्रशिक्षुध्प्रशिक्षकों को व्यावसायिक विकास में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इसलिए, शिक्षक किसी भी विकलांगता से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए एक सामान्य आधार के निर्माण में एक समुदाय के अग्रदूत होते हैं। इस प्रकार, उनके विकलांग व्यक्ति किसी भी वांछित मंच में पवित्र और चमक सकते हैं।

Unit :– 4.3 Community based inclusive development – need, importance and strategies (समुदाय आधारित समावेशी विकास – आवश्यकता, महत्व और रणनीतियाँ)

समुदाय आधारित समावेशी विकास (CBID) कार्यक्रम का शुभारंभ

प्रसंग – हाल ही में, केंद्रीय सामाजिक न्याय मंत्री ने दिव्यांगजनों के पुनर्वास पर 6 महीने का समुदाय आधारित समावेशी विकास (CBID) कार्यक्रम शुरू किया।

- सीबीआईडी कार्यक्रमों में स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, सामाजिक और सशक्तिकरण गतिविधियां, स्थानीय भागीदारों के साथ मिलकर काम करना, स्थानीय . शामिल हो सकते हैं।
- परिवर्तन लाने के लिए सरकारें और विकलांगता आंदोलन। सीबीआईडी विशेष रूप से लोगों की भागीदारी और आवाज को बढ़ावा देता है।
- स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में अक्षमता। उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में, सीबीआईडी कार्यक्रमों में ऐसी गतिविधियां शामिल हैं जो समुदाय को संबोधित करती हैं।
- प्राकृतिक और मानव जनित आपदाओं के समय के लिए तैयारी और लचीलापन। सीबीआईडी वर्णित पहले के काम को बढ़ाता और मजबूत करता है।
- समुदाय आधारित पुनर्वास (सीबीआर) के रूप में और अधिक समावेशी, उत्तरदायी और जवाबदेह समुदायों को प्रोत्साहित करता है।

विवरण

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

उद्देश्य: सामुदायिक रूप से जमीनी स्तर पर पुनर्वास व कार्यकर्ताओं का एक समूह बनाना है जो आंगनवाड़ी और आशा (ASHA) कार्यकर्ताओं के साथ काम कर सकते हैं ताकि क्रॉस–दिव्यांगजनता के मुद्दों से निपट सकें और समाज में दिव्यांग व्यक्तियों को शामिल करने में मदद कर सकें।

- इस कार्यक्रम को श्रमिकों के बीच योग्यता–आधारित ज्ञान और कौशल देने के लिए डिजाइन किया गया है ताकि वे अपने कर्तव्यों को सफलतापूर्वक करने की क्षमता बढ़ा सकें।
- इन श्रमिकों को श्दिव्यांग मित्रश यानी दिव्यांग व्यक्तियों के मित्र के रूप में जाना जाएगा। यह अंग्रेजी, हिंदी और 7 क्षेत्रीय भाषाओं, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगाली, तेलुगु, तमिल और गारो में उपलब्ध होगा।
- भारतीय पुनर्वास परिषद के तहत पुनर्वास में राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड उत्तीर्ण उम्मीदवारों को परीक्षा और पुरस्कार प्रमाण पत्र आयोजित करेगा।

Unit :– 4.4 Creating enabling environments – mobilising local community resources towards the rehabilitation of persons with disabilities- (सक्षम वातावरण बनाना– स्थानीय सामुदायिक संसाधनों को जुटाना विकलांग व्यक्तियों का पुनर्वास) – सामुदायिक लामबंदी (Community mobilization) एक विशेष कार्यक्रम के बारे में लोगों की जागरूकता और मांग बढ़ाने के लिए, संसाधनों और सेवाओं के वितरण में सहायता करने के लिए, और स्थिरता और आत्मनिर्भरता के लिए सामुदायिक भागीदारी को मजबूत करने के लिए जितना संभव हो उतने हितधारकों को एक साथ लाने की प्रक्रिया है। बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है जब समुदाय के विभिन्न हिस्सों के लोग एक समान लक्ष्य साझा करते हैं और जरूरतों की पहचान करने और समाधान का हिस्सा बनने दोनों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। सामुदायिक लामबंदी समुदायों को सशक्त बनाने में मदद करती है और उन्हें अपनी पहल शुरू करने और नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है।

जब तक सामुदायिक समर्थन का निर्माण नहीं हो जाता और समाज के विभिन्न क्षेत्र परिवर्तन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल नहीं हो जाते, तब तक विकलांगता को मुख्यधारा में लाने की दिशा में बहुत कम प्रगति होगी। सीबीआर कार्यक्रम समुदाय में हितधारकों, जैसे विकलांग लोगों, परिवार के सदस्यों, स्वयं सहायता समूहों, विकलांग लोगों के संगठनों, समुदाय के सदस्यों, स्थानीय अधिकारियों, स्थानीय नेताओं, निर्णय और नीति निर्माताओं को बाधाओं को दूर करने के लिए एक साथ लाने के लिए सामुदायिक गतिशीलता का उपयोग कर सकते हैं। समुदाय के भीतर और विकलांग लोगों को उनके समुदायों में समान अधिकारों और अवसरों के साथ सफल समावेश सुनिश्चित करना।

यह तत्व इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि कैसे सीबीआर कार्यक्रम लोगों को कार्य करने के लिए एक साथ ला सकते हैं और उन समुदायों में परिवर्तन के बारे में हैं जिनमें वे काम करते हैं,

संसाधनों को जुटाना और प्रबंधित करना (Mobilize and manage resources):

वित्तीय संसाधन (Financial resources) :–

धन उगाहना (Fundraising) :– नए कार्यक्रमों के विकास के लिए या मौजूदा कार्यक्रमों को अपना काम जारी रखने के लिए सक्षम करने के लिए वित्तीय संसाधनों की तलाश करना आवश्यक है। सीबीआर कार्यक्रमों के लिए वित्त कई अलग–अलग स्रोतों से जुटाया जा सकता है। जहां संभव हो, समुदाय आधारित शौक पर जोर दिया जाना

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

चाहिए, क्योंकि यह कार्यक्रमों की दीर्घकालिक स्थिरता में योगदान देगा। समुदाय में धन के संभावित स्रोतों में शामिल हो सकते है –

- स्थानीय सरकार अनुदान या सब्सिडी
- स्थानीय व्यापार दान और कॉर्पोरेट प्रायोजन
- नागरिक समाज संगठन, उदाहरण के लिए, रोटरी क्लब, लायंस क्लब सेवा शुल्क या विकलांग लोगों के लिए उपयोगकर्ता शुल्क जिनके पास आवश्यक साधन हैं, समुदाय आधारित परिक्रामी निधियों

यदि स्थानीय स्तर पर पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं हैं, तो सीबीआर कार्यक्रमों को विकसित और कार्यान्वित करने के लिए क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर धन उगाहने की आवश्यकता हो सकती है। वित्तीय प्रबंधनरू वित्त के प्रबंधन के लिए एक पारदर्शी प्रणाली स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करेगा कि कार्यक्रम हितधारकों के प्रति जवाबदेह है, जिसमें निकायों, समुदाय के सदस्यों और स्वयं विकलांग लोगों को ढूंढना शामिल है। वित्तीय प्रबंधन कार्यक्रम प्रबंधक की एक महत्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन अन्य शामिल हो सकते हैं, खासकर जब कार्यक्रम बड़े होते हैं और इसमें बड़ी मात्रा में धन शामिल होता है। वित्तीय प्रबंधन में शामिल है –

- यह जाँचने के लिए एक तंत्र है कि लागत उन गतिविधियों से संबंधित है जिन्हें योजना चरण के दौरान उल्लिखित किया गया है या कार्यक्रम प्रबंधक के साथ सहमति व्यक्त की गई है।
- वित्तीय रिकॉर्ड को पर्याप्त रूप से बनाए रखना।
- उपयुक्त जांच और शेष के लिए सिस्टम में तत्काल संदर्भ के लिए वित्तीय आंकड़ों को अद्यतन करना।

कार्यक्रम के लिए समर्थन और स्थिरता वित्तीय सहायता भूटान की शाही सरकार और डब्ल्यूएचओ द्वारा प्रदान की जाती है। सरकार की विकेंद्रीकरण नीति के तहत, समुदायों में लागू होने वाली सभी विकासात्मक गतिविधियों और कार्यक्रमों को अब विकेंद्रीकृत कर दिया गया है। केंद्रीय कार्यक्रम से राशि जिला स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा जिलों में कार्यान्वयन के लिए जारी की जाती है।

सरल उपयोग (Accessibility) :– यह सीबीआर कार्यक्रम में संबोधित प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, यदि सार्वजनिक भवनों, शौचालयों या घरों से संबंधित पहुंच के मुद्दे हैं, तो एक निश्चित राशि (समस्या के आधार पर) सामाजिक मंत्रालय से राष्ट्रीय कोष द्वारा वितरित की जाती है। सेवाएं और समाज कल्याण। स्वैच्छिक श्रम के रूप में सामुदायिक योगदान की अपेक्षा की जाती है। इससे सामुदायिक स्वामित्व बढ़ता है और स्थिरता सुनिश्चित होती है,

सामाजिक सहभाग (Community Participation) :– नई साझेदार एजेंसियों के पास पहले से दी गई अन्य सेवाओं के लिए समुदाय में स्वीकृति और विश्वसनीयता थी। समुदाय अतिरिक्त सेवाओं में दिलचस्पी लेने लगा और सेवाओं को स्वीकार करने में दृष्टिबाधित लोगों की पहचान और प्रेरणा में शामिल हो गया। समुदाय के नेता, जो दृष्टिहीनों द्वारा विकसित गतिशीलता, दैनिक जीवन और सामाजिक कौशल में स्पष्ट रूप से नाटकीय सुधार से प्रभावित थे, ने आर्थिक पुनर्वास के सुधार के लिए समुदाय, सरकार और वित्तीय संगठनों से अन्य सुविधाएं और रियायतें प्राप्त करने में सक्रिय रूप से सहायता की। दृष्टिबाधित लोगों के लिए। इस प्रक्रिया में प्रतिभाशाली ग्राहकों को प्रेरक और सूत्रधार के रूप में शामिल किया गया था, जो कभी–कभी सरकारी क्षेत्रों में एनजीओ में दृष्टिबाधित परिवारों, सामुदायिक नेताओं और अन्य ग्रामीण सेवा संगठनों को सलाह देते थे।

परियोजना विकास के भाग के रूप में, एक सप्ताह या दो सप्ताह की अवधि के लिए समय–समय पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते थे। भाग लेने वाली एजेंसियों को केस स्टडी, अपने क्षेत्रों के विशेष

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

पहलुओं और विशिष्ट और सामान्य कठिनाइयों को साझा करके एजेंडा में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों को इंटरैक्टिव बनाने की योजना बनाई गई थी ताकि आईईएस और परियोजनाओं का विश्लेषण किया जा सके और समाधान विकसित किया जा सके। आस–पास के सरकारी अधिकारियों, नेत्रहीन कल्याण संगठनों और नेत्र देखभाल संस्थानों को भी अतिथि संकाय के रूप में आमंत्रित किया गया था।

सीबीआर में भागीदारी को बढ़ावा देने में सरकार की रणनीतियां और भूमिका :– कार्यान्वयन में सुधार और मजबूती के लिए सरकार को सीबीआर प्रोग्रामर्स के सुचारू संचालन को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रबंधन ढांचे की स्थापना करनी चाहिए। इसमें नीति–निर्माण और योजना, उपयुक्त प्रशासन संरचना, संसाधनों का विकेंद्रीकरण, प्रशिक्षण कर्मियों का प्रावधान, आगे की रेफरल प्रणाली और निगरानी और मूल्यांकन शामिल हैं।

नीति निर्माण, समीक्षा और प्रचार (Policy formulation , review and promotion) :– आज विभिन्न सरकारों ने हाशिए पर पड़े समूहों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई रणनीतियां निर्धारित की हैं। सरकारों की नीतियां सामान्य रूप से कमजोर समूहों पर लागू होती हैं, लेकिन नीतियों को डिजाइन करने की आवश्यकता है, जो कि पीडब्ल्यूडी के लिए पर्याप्त रूप से संबोधित है। इसके लिए नए बनाने, मौजूदा को बढ़ावा देने या समीक्षा करने की आवश्यकता हो सकती है, ताकि विशेष क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य सेवाओं, स्कूली शिक्षा और रोजगार के अवसरों में किसी भी कमी को दूर किया जा सके जो पीडब्ल्यूडी को प्रभावित करते हैं। एक विस्तृत नीति विवरण तैयार करने में सरकार बताती है कि क्या हासिल किया जाना है, परिवर्तन को कैसे लागू किया जाए, कौन जिम्मेदार है, कब परिवर्तन किया जा सकता है और संसाधन प्रदान करने की प्रतिबद्धता है। युगांडा में, भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक रणनीति का इस्तेमाल किया गया है।

उपयुक्त प्रशासनिक ढांचे को स्थापित करना (Putting up appropriate administrative structures) :– सरकार ने सीबीआर कार्यक्रमों में सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक संरचनाएँ स्थापित की हैं। इसमें विकलांगता के मुद्दों के समन्वय के लिए लिंग, श्रम और सामाजिक विकास मंत्रालय में विकलांग और बुजुर्ग विभाग शामिल हैं। इस विभाग ने एक राष्ट्रीय सीबीआर संचालन समिति भी स्थापित की है, जो सीबीआर कार्यक्रमों की गतिविधियों की निगरानी के लिए प्रमुख हितधारकों को शामिल करती है। विकेंद्रीकरण के कारण, एक समान संरचना जिला और निचले स्तरों पर दोहराई गई है।

संसाधनों का जुटाव (Mobilization of resources) :– फंड, कार्मिक, उपकरण, परिवहन, भौतिक संरचनाएं, सांख्यिकीय सेवाएं, अनुसंधान और सूचना कुछ ऐसे संसाधन हैं जिन्हें जुटाना है। केंद्र और स्थानीय सरकारी निकाय, समुदाय और गैर–सरकारी संगठन इन संसाधनों को प्रदान करते हैं यहां सरकार की भूमिका समुदायों के साथ उपलब्ध संसाधनों की पहचान करना है, और समुदाय को यह बताना है कि उसे क्या करना है जैसे स्थानीय प्रबंधन और इसके कुछ प्रदान करना साधन । फिर सरकार लापता घटकों को प्रशिक्षण के माध्यम से भर सकती है। तकनीकी पर्यवेक्षण, प्रशासनिक सहायता और रेफरल

सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए विकेंद्रीकरण (Decentralizing to encourage community participation) – विकेंद्रीकरण में सीबीआर कार्यक्रम के विकास की प्रमुख विशेषताओं में से एक। हालांकि, यह अपने आप में पर्याप्त नहीं है, क्योंकि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि इस प्रक्रिया से समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रमों में उच्च स्तर की भागीदारी हो सकती है। दृष्टिकोण में बदलाव के बाद विकेंद्रीकरण होना चाहिए।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

प्रशिक्षण और संवेदीकरण (Training and sensitization) :– यह घटक सभी स्तरों पर एक सक्षम कार्यबल के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। युगांडा में सीबीआर कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण UNISE-COMBRA और मेकरेरे विश्वविद्यालय (मेकर्स विश्वविद्यालय 1994) में किया जाता है। सीनेटीकरण एक अन्य महत्वपूर्ण गतिविधि है। सभी हितधारकों को तकनीकी कर्मियों के असंवेदनशीलता में शामिल किया गया है।

Unit :– 4.5 Issues and challenges in rehabilitation of child with disability in the community समुदाय में विकलांग बच्चों के पुनर्वास के मुद्दे और चुनौतियाँ –

प्रतिबंध (CONSTRAINTS) :–

अपर्याप्त फंडिंग (Inadequate funding) :– सरकार किस देश में सीएचआर योजना का विस्तार करना चाहती है, लेकिन अपर्याप्त धन के कारण, सीबीआर अभी भी एसबी जिलों से बाहर तक ही सीमित है।

सांख्यिकीय डेटा का अभाव (Lack of statistical data) – विश्वसनीय आंकड़ों की कमी के कारण विकलांगता की व्यापकता ज्ञात नहीं है। यह आशा की जाती है कि अगली जनसंख्या और आवास जनगणना योजना और संसाधन आवंटन में आसानी के लिए बेहतर विकलांगता आंकड़े लेकर आएगी।

सिफारिशों (RECOMMENDATIONS) :–

अधिकारिता (Empowerment) :– भले ही सरकार द्वारा पीडब्ल्यूडी के बीच गरीबी को कम करने और रोजगार तक पहुंच को बढ़ावा देने के लिए कुछ उपाय किए गए हैं, लेकिन यह एक ऐसा है, जिसे अभी भी अधिक आवश्यकता है। पीडब्ल्यूआई को समुदाय में वित्तीय योजनाओं के लिए एलिटी की जरूरत है। इसके माध्यम से, सरकार ने यह संदेश दिया होगा कि पीडब्ल्यूडी उत्पादक उपक्रमों में लगे हुए हैं, टिविंग के एक बेहतर सम्ब्रिड को सांस्कृतिक मूल्य और श्एंजेंसश को बढ़ावा देने की भी आवश्यकता है, जिसमें सांकेतिक भाषा भी शामिल है, जिसका उपयोग बधिरों द्वारा सभी की गरिमा को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए किया जाता है।

लिंग संतुलन (Gender balance) :– लिंग संतुलन, वंचित समूहों के प्रतिनिधित्व पर जोर दिया जाना चाहिए और समाज से पीडब्ल्यूडी के अधिकारों का सम्मान करने के लिए आह्वान किया जाना चाहिए, आंशिक रूप से बालिका और जीती हुई लड़की के लिए बेहतर शैक्षिक अवसर होने की आशा है, चाहे वह शारीरिक रूप से सक्षम हो या नहीं ।.

स्वास्थ्यचर्या प्रणाली (Health care system) :– चूंकि विकलांगता के प्रमुख मामले संवाद और रोकथाम योग्य चर्चा कर रहे हैं, बेहतर स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली विकलांगता की दर को कम करने के लिए एक पूर्व–आवश्यक फोट है,

भौतिक और पर्यावरणीय बाधाओं को दूर करना (Removing physical and environmental barriers) :– सरकार को अधिक सतर्क रहने और ऐसी गतिविधियों से बचने में सक्षम होना चाहिए कि मासिक विकलांगता, जैसे युद्ध और मोटर दुर्घटना कानून लापरवाह ड्राइवरों को दंडित करने के लिए लागू किया जाना चाहिए और घरेलू

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

हिंसा में शामिल लोगों को उत्पादकता के लिए अनुकूल होना चाहिए और प्रतिवर्ती तनाव प्रभाव से बचा जाना चाहिए। .

संस्थागत पुनर्वास (Institutional rehabilitation) :– हर कोई अच्छी तरह से जानता है कि समुदाय आधारित रिहैबिलिटेशन पीडब्ल्यूडी को सभी कौशल प्रदान नहीं करता है, ऐसे लोग हैं जो गंभीर रूप से विकलांग हैं, और जिन्हें अभी भी संस्थानों की सेवाओं की आवश्यकता है, इसलिए सरकारों को संस्थानों को फंड देना जारी रखना चाहिए, ताकि वे हाथ से काम कर सकें।

समन्वय (Coordination) :– जैसा कि पहले ही चर्चा की जा चुकी है, सीबीआर विभिन्न स्टेनडर द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। दोहराव से बचने के लिए, सरकार को स्टैडटॉल्डर्स के साथ गतिविधियों का समन्वय करने और उनकी निगरानी और मूल्यांकन करने में सक्षम होना चाहिए।

Unit :– 5 Role of community in education of children with disabilities- (विकलांग बच्चों की शिक्षा में समुदाय की भूमिका।)

Unit :– 5.1 Community awareness about disabilities – early identification, intervention and education - (विकलांगों के बारे में सामुदायिक जागरूकता – शीघ्र पहचान, हस्तक्षेप और शिक्षा।)
– विकलांग लोगों के सामने सबसे बड़ी बाधा अन्य लोग हैं। विकलांगता जागरूकता का अर्थ है लोगों को विकलांगों के बारे में शिक्षित करना और लोगों को नौकरी या कार्य करने के लिए आवश्यक ज्ञान देना, इस प्रकार अच्छे अभ्यास को गरीबों से अलग करना। अब केवल यह जान लेना ही पर्याप्त नहीं है कि विकलांगता भेदभाव गैर–कानूनी है।

विकलांगता जागरूकता के इन पहलुओं के उदाहरणों में शामिल हैं:(Examples of these facets of disability awareness include) :–

1. विकलांगों के अर्थ को समझना और यह कैसे किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब नहीं है।

2. विकलांग व्यक्तियों के साथ व्यवहार और संवाद करना।

3. समाज में विशेष रूप से साथी छात्रों के बीच अपेक्षित अक्षमताओं के प्रकारों की व्याख्या करना।

4 विकलांगों की परवाह किए बिना सामाजिक समानता की अवधारणा।

समानता (Equality) :– आपके बच्चे की विकलांगता चाहे जो भी हो, आपको एक बार में एक दिन लेने की जरूरत है। शारीरिक रूप से विकलांग बच्चे जल्दी से सीख सकते हैं कि कैसे घूमना है और एक स्वस्थ बच्चे की तरह खुद का आनंद लेना है। व्हीलचेयर या हाथ छूटने से बच्चे को कुछ करने की कोशिश करने से नहीं रोका जा सकता है और यदि आप उन्हें समान होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, तो वे काम करें जो उनके भाई–बहन करते हैं और उन्हें आत्मनिर्भर होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, वे बड़े होकर फलदायी जीवन जीने में सक्षम होंगे। .

UP066 Usha Charitable Trust, Lucknow

अपने विकलांग बच्चे को एक ऐसे कार्यक्रम में शामिल करें जहां वे नई चीजें सीख सकें और नए रोमांच का अनुभव कर सकें। जितना हो सके उन्हें प्रोत्साहित करें और उन पर दया करने से बचें, यह सबसे बुरा काम है जो आप कर सकते हैं। उन्हें आपकी दया की जरूरत नहीं है, उन्हें प्यार और प्रोत्साहन की जरूरत है।

कार्यक्रम (Programs) :– बहुत सारे विकलांगता कार्यक्रम उपलब्ध हैं जहाँ आप बच्चे एक कौशल सीख सकते हैं। आप पा सकते हैं कि वे एक कंप्यूटर प्रतिभाशाली हैं और तकनीकी या गणितीय समस्याओं को जल्दी से हल करने में सक्षम हैं, उन्हें एक प्रोग्राम में दर्ज करें जहां वे कंप्यूटर प्रोग्रामिंग सीख सकते हैं या कंप्यूटर को कैसे ठीक कर सकते हैं।

सभी प्रकार की विकलांगों के लिए बहुत सारे कार्यक्रम उपलब्ध हैं। यदि आपके बच्चे को प्रोत्साहित किया जाता है और खुद पर विश्वास है तो कोई कारण नहीं है कि वह इनमें से किसी एक कार्यक्रम में नहीं बढ़ेगा। यह टोकरी बनाना और अपने हाथों का उपयोग करना या तकनीकी होना और इलेक्ट्रॉनिक्स को ठीक करना हो सकता है, लेकिन नौकरी के साथ वे महत्वपूर्ण महसूस करते हैं और अंततः स्वतंत्र होने में सक्षम होते हैं।

विकलांगता जागरूकता को व्यापक रूप से फैलाने की आवश्यकता है ताकि व्यवसाय यह समझें कि क्योंकि किसी की विकलांगता है, इसका मतलब यह नहीं है कि वे काम करने और परिणाम देने में असमर्थ हैं।

विकलांगता अधिकार कानूनों के लिए एक गाइड (A Guide to Disability Rights Laws) :– हर कोई समान अधिकारों का हकदार है और जब रोजगार समानता से लेकर सार्वजनिक परिवहन और विभिन्न सेवाओं तक विकलांगता अधिकारों की बात आती है तो सख्त कानून हैं।

विकलांगता जागरूकता रणनीतियाँ (Disability Awareness Strategies) :– सामाजिक स्तर के सभी स्तरों के बीच समानता की खोज यह सुनिश्चित करने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारण है कि सभी को जीवन जीने का उचित मौका दिया जाए। इस प्रकार, विकलांग लोगों को समान के रूप में पहचानने का मूल्य दूसरों को सिखाने के लिए बहु–विकलांगता जागरूकता रणनीतियों का उपयोग महत्वपूर्ण है। एक मायने में, ये वे लोग हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में आश्चर्यजनक कारनामों के लिए समान रूप से सक्षम हैं और इस तरह से अत्यंत सम्मान और मान्यता के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए।

तो ऐसे कौन से रास्ते हैं जिनके माध्यम से विकलांगता जागरूकता को बढ़ावा दिया जा रहा है

सबसे स्पष्ट कार्यक्रम स्कूलों में विकलांगों को पहचानने का है। लोगों को ढालने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उन्हें कम उम्र में ही सभी पहलुओं में समानता के मूल्य के बारे में पढ़ाया जाए। इस स्तर पर, बच्चों के पास बाहरी शटर नहीं होते हैं जो वयस्कों की विशेषता रखते हैं और इसलिए शिक्षण के प्रति ग्रहणशील होने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं। संयुक्त शिक्षा के माहौल को बढ़ावा देने के लिए पहले से ही कई स्कूल हैं जो सामान्य बच्चों को विकलांग लोगों के साथ एकीकृत करते हैं। यह विकलांग युवाओं को समाज से अलग–थलग नहीं होने के लिए स्वीकार करने में मदद करता है। यह उन्हें इतनी कम उम्र में अन्य बच्चों के साथ बातचीत करने का मौका देता है ताकि वे अपने पर्यावरण से परिचित हो सकें, इसके लिए उन्हें गले लगाने की आवश्यकता नहीं है।

नतीजतन, इसके विपरीत भी विकलांगता जागरूकता के लिए एक वास्तविक मूल्यवान उपकरण हो सकता है। ऐसे स्कूल हैं जो विशेष रूप से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह महत्वपूर्ण है

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

क्योंकि कुछ मामलों में सामान्य स्कूल विशेष बच्चों की महत्वपूर्ण और अनूठी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते हैं। प्रोम ड्रेसेस में अंतर के अलावा, विभिन्न भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक जरूरतों को भी इन बच्चों को यह महसूस कराए बिना पर्याप्त रूप से पूरा किया जाना चाहिए कि वे ष्वहष अलग हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे केवल विभिन्न रूपों में समझा जाने लगा है, विशेष रूप से चिकित्सा विज्ञान मानसिक अक्षमता जैसी स्थितियों को समझने में बड़ी प्रगति करना शुरू कर देता है। शिकन क्रीम के आविष्कार की तरह, इन शोधों में समय लगता है लेकिन जैसे–जैसे ज्ञान का आधार बढ़ता है, वे उत्तरोत्तर अधिक प्रभावी, अधिक लक्षित और अधिक दूरगामी होते जाते हैं।

पारंपरिक और विशेष कक्षाओं की सीमाओं से परे, ऐसे कई अवसर हैं जो कार्रवाई में विकलांगता जागरूकता रणनीतियों को दिखाते हैं। एक अच्छा उदाहरण विकलांग लोगों के लिए पैरालिंपिक, ओलंपिक का मंचन है। जो लोग इन घटनाओं से परिचित हैं, वे जानते हैं कि विकलांग लोग मानव उपलब्धि के चरम करतब करने में सक्षम हैं। ये शब्द के शुद्धतम अर्थों में एथलीट हैंय जो लोग अदृश्य सौर पैनलों या मोटोरोला मोबाइल बैटरी से लैस हैं, जो उन्हें किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति में बिजली देने की अनुमति देते हैं। इन आयोजनों में व्हीलचेयर पर बैठे लोग टेनिस, बास्केटबॉल और वॉलीबॉल सहित कई तरह के खेलों में प्रतिस्पर्धा करते हैं। विकलांग लोग ट्रैक पर दौड़ते हैं और कई अन्य विकलांग लोग खेल में सर्वश्रेष्ठ मानव उपलब्धि के लिए अपनी कथित सीमाओं को पार कर जाते हैं। यह इस धारणा के बावजूद अंतिम है कि विकलांग लोग केवल मसाज टेबल पर ही अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

दुनिया भर में विकलांगता स्थितियों के बारे में अधिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए कई कारण और स्वयंसेवी कार्य भी किए गए हैं। हर साल, मशहूर हस्तियों, एथलीटों, परोपकारी संगठनों, नागरिक समूहों और कई अन्य लोगों ने विभिन्न विकलांगों को सुर्खियों में लाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए। एक उदाहरण के रूप में, पी कप्पा पाई बिरादरी द्वारा अग्रणी साइकिल चालन कार्यक्रम हैं जो विकलांगों की दुर्दशा पर मीडिया का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। ये वेब डिजाइन पहल और वेबसाइट मार्केटिंग रणनीतियों के खिंचाव से परे योग्य, महान और प्रभावी कारण हैं।

Unit :– 5.2 Community support for home based education and in times of disasters - (घर आधारित शिक्षा और आपदाओं के समय में सामुदायिक सहायता) – बच्चे सबसे अच्छा सीखते हैं जब उनके जीवन में महत्वपूर्ण वयस्क – माता–पिता, शिक्षक, और परिवार और समुदाय के अन्य सदस्य – उन्हें प्रोत्साहित करने और समर्थन करने के लिए मिलकर काम करते हैं। यह मूल तथ्य एक मार्गदर्शक सिद्धांत होना चाहिए क्योंकि हम सोचते हैं कि स्कूलों को कैसे व्यवस्थित किया जाना चाहिए और बच्चों को कैसे पढ़ाया जाना चाहिए। अकेले स्कूल बच्चे की सभी विकासात्मक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते हैंरू माता–पिता की सार्थक भागीदारी और समुदाय से समर्थन आवश्यक है।

बच्चों को शिक्षित करने के लिए स्कूलों और परिवारों के बीच एक मजबूत साझेदारी की आवश्यकता सामान्य ज्ञान की तरह लग सकती है। सरल समय में, यह रिश्ता स्वाभाविक और बनाए रखने में आसान था। शिक्षक और माता–पिता अक्सर पड़ोसी होते थे और उन्हें बच्चे की प्रगति पर चर्चा करने के कई अवसर मिलते थे। बच्चों ने शिक्षकों और माता–पिता के समान संदेशों को सुना और समझा कि उनसे घर और स्कूल में समान मानकों को बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

जैसे–जैसे समाज अधिक जटिल और मांग वाला होता गया है, वैसे–वैसे ये रिश्ते भी अक्सर किनारे हो गए हैं। न तो शिक्षकों और न ही माता–पिता के पास बच्चों की ओर से एक–दूसरे को जानने और कामकाजी संबंध स्थापित करने के लिए पर्याप्त समय है। कई समुदायों में, माता–पिता को कक्षाओं में समय बिताने से हतोत्साहित किया जाता है और शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे परिवार के सदस्यों से तभी परामर्श करें जब कोई बच्चा परेशानी में हो। परिणाम, बहुत से मामलों में, गलतफहमी, अविश्वास और सम्मान की कमी है, जिससे कि जब कोई बच्चा पीछे छूट जाता है, तो शिक्षक माता–पिता को दोष देते हैं और माता–पिता शिक्षकों को दोष देते हैं।

साथ ही, हमारे समाज ने एक युवा व्यक्ति के विकास में माता–पिता और शिक्षकों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं के बारे में कृत्रिम भेद पैदा किया है। हम सोचते हैं कि स्कूलों को शिक्षाविदों को पढ़ाने के लिए रहना चाहिए और घर वह जगह है जहां बच्चों का नैतिक और भावनात्मक विकास होना चाहिए।

फिर भी बच्चे कक्षा में प्रवेश करते समय मूल्यों और संबंधों के बारे में सीखना बंद नहीं करते हैं, न ही वे शिक्षाविदों को सीखना बंद करते हैं – और सीखने के बारे में दृष्टिकोण – जब वे घर पर या अपने समुदाय में कहीं और होते हैं। वे लगातार निरीक्षण करते हैं कि उनके जीवन में महत्वपूर्ण वयस्क एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, निर्णय कैसे किए जाते हैं और निष्पादित किए जाते हैं और समस्याओं का समाधान कैसे किया जाता है।

स्कूल के अंदर और बाहर बच्चों के सभी अनुभव, उनकी इस भावना को आकार देने में मदद करते हैं कि कोई उनकी परवाह करता है, उनकी आत्म–मूल्य और योग्यता की भावना, उनके आसपास की दुनिया की उनकी समझ, और इस बारे में उनका विश्वास कि वे इस योजना में कहाँ फिट होते हैं की चीजे ।

इन दिनों, परिवारों और शिक्षकों के बीच मजबूत संबंध बनाने के लिए असाधारण प्रयास करने पड़ सकते हैं। स्कूलों को परिवारों तक पहुंचना होता है, जिससे वे शैक्षिक प्रक्रिया में पूर्ण भागीदार के रूप में स्वागत महसूस करते हैं, बदले में, परिवारों को घर और स्कूल दोनों में अपने बच्चों का समर्थन करने के लिए समय और ऊर्जा की प्रतिबद्धता बनानी पड़ती है।

इन कनेक्शनों को फिर से स्थापित करने में शामिल प्रयास इसके लायक है, क्योंकि देश भर में कई समुदाय – जिनमें हम काम करते हैं – की खोज कर रहे हैं। हमारा अनुभव है कि छात्रों के विकास और प्रदर्शन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण और सार्थक माता–पिता की भागीदारी संभव, वांछनीय और मूल्यवान है।

परिवार–विद्यालय–सामुदायिक भागीदारी एक साझा जिम्मेदारी और पारस्परिक प्रक्रिया है जिसके तहत स्कूल और अन्य सामुदायिक एजेंसियां और संगठन परिवारों को सार्थक और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त तरीके से जोड़ते हैं, और परिवार अपने बच्चों के विकास और सीखने में सक्रिय रूप से समर्थन करने के लिए पहल करते हैं। स्कूल और सामुदायिक संगठन भी माता–पिता की बात सुनने, उनका समर्थन करने और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि उनके पास अपने बच्चों के स्कूल के अनुभव में सक्रिय भागीदार बनने के लिए उपकरण हों।

भागीदारी छात्रों को उनकी अधिकतम क्षमता हासिल करने में मदद करने के लिए आवश्यक है, जबकि माता–पिता और समुदाय की भागीदारी हमेशा पब्लिक स्कूलों की आधारशिला रही है, मुझे इन सहयोगी प्रयासों के महत्व की अधिक मान्यता और समर्थन की आवश्यकता है।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

Unit :– 5.3 Collaboration with Aganwadis and other Governmental agencies for education of children with disabilities (की शिक्षा के लिए आंगनवाड़ियों और अन्य सरकारी एजेंसियों के साथ सहयोग विकलांग बच्चे) – शोध से पता चलता है कि मस्तिष्क की 80 प्रतिशत क्षमता तीन साल की उम्र से पहले विकसित हो जाती है और इस प्रकार प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा बच्चों में विकासात्मक लाभ को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष अवसर प्रदान करती है।

एकीकृत बाल विकास योजना (आईसीडीएस) के तहत आंगनबाडी कार्यकर्ताओं को अपने आंगनबाडी केंद्रों पर मौजूद बच्चों में सीखने की अक्षमता का जल्द पता लगाना आवश्यक है।

2016 के दौरान, त्रिवेंद्रम में, सामाजिक न्याय विभाग ने विशेष जरूरतों वाले 600 से अधिक बच्चों को आंगनवाड़ियों में लाने के लिए जिले में बड़े पैमाने पर अभ्यास शुरू किया ताकि उन्हें समावेशी शिक्षा के लिए तैयार किया जा सके। राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति के अनुरूप, विभाग ने 6 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों को नियमित स्कूलों में एकीकृत करने के लिए सीखने की अक्षमता और विशेष जरूरतों वाले बच्चों की पहचान करने के लिए घर–घर सर्वेक्षण किया। 2 , इसके तहत केंद्रीय मानसिक मंदता संस्थान ने इन बच्चों से निपटने के लिए करीब 200 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया।

ईसीसीई जोखिम वाले बच्चों की पहचान करने और उनका समर्थन करने में मदद करता है। हस्तक्षेप के साथ प्रारंभिक मूल्यांकन के माध्यम से, कोई भी प्रासंगिक जानकारी प्राप्त कर सकता है, विशेष रूप से बच्चे क्या कर सकता है और हस्तक्षेप के बारे में जो उसकी सीखने की क्षमता को अनुकूलित करेगा। यह इस संभावना को भी बढ़ाता है कि सीखने की अक्षमता वाले बच्चे समावेशी मुख्यधारा की शैक्षिक सेटिंग्स में भाग ले सकते हैं और फल–फूल सकते हैं, अनुसंधान से पता चलता है कि तीन शिशुओं और बच्चों में से एक जो प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाएं प्राप्त करते हैं, भविष्य में विकलांगता का अनुभव नहीं करते हैं या प्रीस्कूल में विशेष शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है।

आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से प्रदान की जाने वाली प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा का उद्देश्य सीडब्ल्यूएसएन सहित बच्चों में विकास करना है–

- अच्छी काया, पेशीय समन्वय, बुनियादी मोटर कौशल।
- खोज, निवेश, प्रयोग और सीखने के द्वारा बच्चे को अपने पर्यावरण को समझने में सक्षम बनाने के लिए बौद्धिक जिज्ञासा को प्रोत्साहित करनाय (पपप) स्वयं, दूसरों, चीजों और पर्यावरण की सौंदर्य प्रशंसा।
- भावनाओं और भावनाओं को व्यक्त करने, समझने, स्वीकार करने और नियंत्रित करने के लिए मार्गदर्शन करके भावनात्मक परिपक्वता।
- नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य ताकि बड़ों के प्रति ईमानदार, आज्ञाकारी, ईमानदार, दयालु, सच्चा और सम्मानजनक हो।
- आत्मविश्वास और आंतरिक अनुशासन।
- धाराप्रवाह, सही और स्पष्ट भाषा में विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता।
- समृद्ध सीखने के अनुभव के माध्यम से व्यक्तित्व।
- सामाजिक दृष्टिकोण, समूह शिष्टाचार और दूसरों के साथ चीजों को साझा करना, दूसरों के साथ रहना और खेलना और प्राकृतिक आक्रामकता और विनाशकारीता को नियंत्रित करना।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- अच्छे आचरण, व्यक्तिगत समायोजन के लिए कौशल और दैनिक जीवन की गतिविधियों को स्वतंत्र रूप से करने की क्षमता आदि।
- इसके अलावा, ये सभी बच्चे के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने और प्राथमिक स्तर या उससे ऊपर की नियमित शिक्षा में उसकी लाभकारी और पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए बहुत जरूरी हैं।

स्वैच्छिक संगठनों को अनुदान की प्रक्रिया (Procedure for Grant to Voluntary Organisations) :–
योजना को लागू करने के इच्छुक स्वैच्छिक संगठनों को अपने आवेदन संबंधित राज्य सरकारध्संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन के माध्यम से निर्धारित प्रोफार्मा पर भेजना चाहिए। राज्य सरकार को तीन महीने की अवधि के भीतर संगठनों की पात्रता, उपयुक्तता, प्रस्ताव की प्रासंगिकता और इसे लागू करने के लिए एजेंसी की क्षमता के बारे में अपना विचार देना चाहिए। राज्य सरकार द्वारा टिप्पणियां भेजी जानी चाहिए, भले ही प्रस्ताव की सिफारिश नहीं की गई हो। इसलिए कारण दे रहे हैं। इस योजना के तहत वित्तीय सहायता के लिए पात्र होने के लिए स्वयंसेवी संगठनों, सार्वजनिक ट्रस्टों और गैर–लाभकारी कंपनियों को चाहिए –

- संघ के लेखों का उचित गठन है।
- संविधान में स्पष्ट रूप से परिभाषित अपनी शक्तियों और कर्तव्यों के साथ एक उचित रूप से गठित प्रबंध निकाय है।
- स्वैच्छिक आधार पर, अपने कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए एक जानकार व्यक्तियों की भागीदारी को सुरक्षित करने की स्थिति में होना।
- लिंग, धर्म, जाति या पंथ के आधार पर किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के साथ भेदभाव नहीं करेगा।
- किसी भी राजनीतिक दल के हितों को आगे बढ़ाने के लिए सीधे कार्य नहीं करना।
- किसी भी तरह से सांप्रदायिक वैमनस्यता को न भड़काएं।

इस योजना के तहत सहायता के लिए केवल उन्हीं पात्र एजेंसियों पर विचार किया जाएगा जो तीन साल से अस्तित्व में हैं। विशेष रूप से योग्य श्रमिकों वाली एजेंसियों के संबंध में इस आवश्यकता को माफ किया जा सकता है या जो अन्यथा एक विशेष विचार को उचित ठहरा सकता है।

राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन की सिफारिश के साथ स्वयंसेवी संगठनों के प्रस्ताव अगले वित्तीय वर्ष के लिए हर साल दिसंबर के अंत तक मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार को भेजे जाने चाहिए। मंत्रालय में प्रस्तावों की जांच की जाएगी और एक वर्ष के लिए स्वीकृत अनुदान का 50 प्रतिशत पहली किस्त के रूप में जारी किया जाएगा और शेष 50 प्रतिशत अनुदान अनुभाग के कम से कम 75 प्रतिशत के उपयोग की एजेंसी द्वारा रिपोर्ट किए जाने के बाद जारी किया जाएगा। दूसरी किस्त जारी करने के अनुरोध के साथ प्रगति रिपोर्ट (निर्धारित प्रोफार्मा में) और व्यय विवरण संलग्न किया जाना चाहिए। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग द्वारा अपने पक्ष में आहरित डिमांड ड्राफ्ट/चेक द्वारा अनुदान सीधे एजेंसी को प्रेषित किया जाएगा।

स्वैच्छिक संगठनों को अनुदान की शर्तें (Conditions of Grant to Voluntary Organisations) :–

- अनुदान प्राप्त करने वाले को एक निर्धारित प्रपत्र पर बांड निष्पादित करने की आवश्यकता होगी। यदि एजेंसी कानूनी इकाई नहीं है तो बांड को दो जमानतदारों द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

- वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाली एजेंसी केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय या राज्य शिक्षा विभाग के एक अधिकारी द्वारा निरीक्षण के लिए खुली होगी।
- परियोजना के खातों को ठीक से और अलग से बनाए रखा जाएगा और जब भी आवश्यक हो प्रस्तुत किया जाएगा। उन्हें भारत सरकार या राज्य सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त अधिकारी द्वारा जांच के लिए खुला होना चाहिए। वे भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक द्वारा अपने विवेक पर एक नमूना जांच के लिए भी खुले होंगे।
- चार्टर्ड एकाउंटेंट द्वारा विधिवत प्रतिहस्ताक्षरित निर्धारित प्रपत्र में उपयोगिता प्रमाण पत्र के साथ लेखापरीक्षित को पिछले वर्ष के संबंध में छह महीने के भीतर या उस अवधि की समाप्ति के बाद प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है जिसके लिए अनुदान स्वीकृत किया गया है।
- जब राज्य सरकारध्भारत सरकार के पास यह मानने के कारण हों कि स्वीकृत धन का उपयोग स्वीकृत उद्देश्य के लिए नहीं किया जा रहा है तो अनुदान का भुगतान रोका जा सकता है और पहले के अनुदानों की वसूली की जा सकती है।
- अनुदेयी एजेंसी मानव संसाधन विकास मंत्रालय को यथा निर्धारित रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

Unit :– 5.4 Community as a stakeholder in special and inclusive education (विशेष और समावेशी शिक्षा में एक हितधारक के रूप में समुदाय) – शिक्षा में, हितधारक शब्द आमतौर पर किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो किसी स्कूल और उसके छात्रों के कल्याण और सफलता में निवेश करता है, जिसमें प्रशासक, शिक्षक, कर्मचारी सदस्य, छात्र, माता–पिता, परिवार, समुदाय के सदस्य, स्थानीय व्यापारिक नेता और निर्वाचित अधिकारी शामिल हैं। स्कूल बोर्ड के सदस्यों, नगर पार्षदों और राज्य के रूप में प्रतिनिधि, हितधारक सामूहिक संस्थाएं भी हो सकते हैं, जैसे कि स्थानीय व्यवसाय, संगठन, वकालत समूह, समितियां, मीडिया आउटलेट और सांस्कृतिक संस्थान, विशिष्ट समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठनों के अलावा, जैसे शिक्षक संघ, अभिभावक शिक्षक संगठन और अधीक्षकों का प्रतिनिधित्व करने वाले संघ , प्रधानाध्यापक , स्कूल बोर्ड , या विशिष्ट शैक्षणिक विषयों के शिक्षक एक शब्द में, हितधारकों के पास स्कूल और उसके छात्रों में हिस्सेदारी है, जिसका अर्थ है कि उनके पास व्यक्तिगत, पेशेवर, नागरिक, या वित्तीय हित या चिंता है।

हालाँकि, समावेशी शिक्षा को एक वास्तविकता बनाने के लिए, सिस्टम में कई टुकड़े करने होंगे। यह सच है कि भारत सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण निधि आवंटन किया है। लेकिन ऐसा करने के लिए हमें हितधारकों को उपयुक्त रूप से तैयार और शामिल करने की आवश्यकता है। कुछ हितधारकों में नियमित शिक्षक, विशेष ध संसाधन शिक्षक, स्कूल प्रशासक, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता–पिता और उनके साथियों के माता–पिता, जिनकी विशेष आवश्यकता नहीं हो सकती है, स्वयं विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे शामिल हैं। संक्षेप में, समाज के सभी वर्ग जिनका प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से बच्चों की शिक्षा में हित है। समावेशन की सफलता समन्वित हितधारकों में निहित है,

2006 में विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों के संयुक्त राष्ट्र के कन्वेंशन ने दुनिया भर के समुदायों के भीतर विकलांग व्यक्तियों को उनके पूर्ण समावेश और भागीदारी के अधिकार को सुविधाजनक बनाने के लिए देशों की आवश्यकता की घोषणा की। विकलांग छात्रों और उनके परिवारों के जीवन की समग्र तैयारी और गुणवत्ता में समुदाय स्पष्ट रूप से एक आवश्यक भूमिका निभाता है। वर्तमान अध्याय विशेष रूप से निर्देशात्मक प्रोग्रामिंग और

माता–पिता की वकालत के भीतर समुदाय की भूमिका को संबोधित करेगा। भागीदारी को संदर्भ के आधार पर विभिन्न तरीकों से व्याख्या किया जा सकता है जो विभिन्न डिग्री या भागीदारी के स्तर को स्पष्ट करता है, और शब्द की संभावित परिभाषा प्रदान करता है, जिसमें शामिल हैं –

- केवल एक सेवा के उपयोग के माध्यम से भागीदारी (जैसे स्कूल में बच्चों का नामांकन करना या प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधा का उपयोग करना।
- धन, सामग्री और श्रम के योगदान के माध्यम से भागीदारी।
- उपस्थिति (उदाहरण के लिए स्कूलों में माता–पिता की बैठक में) के माध्यम से भागीदारी, दूसरों द्वारा किए गए निर्णयों की निष्क्रिय स्वीकृति का अर्थ है।
- एक सेवा के वितरण में भागीदारी, अक्सर अन्य अभिनेताओं के साथ एक भागीदार के रूप में।
- प्रत्यायोजित शक्तियों के कार्यान्वयनकर्ताओं के रूप में भागीदारी।
- शहर स्तर पर वास्तविक निर्णय लेनेश में भागीदारी में समस्याओं की पहचान, व्यवहार्यता का अध्ययन, योजना, कार्यान्वयन और मूल्यांकन शामिल है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सामुदायिक भागीदारी (Community participation in Teaching Learning Process) – शिक्षण मानकों का निर्धारण, भर्ती, शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षक का वेतन, सेवा की स्थिति, पदोन्नति और अनुशासन ऐसे महत्वपूर्ण कारक हैं जो हमेशा बहस के दायरे में आते हैं। शिक्षक के चयन में समुदाय की भागीदारी उनकी आवश्यकता के अनुसार उत्कृष्ट शिक्षक के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। समुदाय द्वारा चयनित शिक्षक समुदाय के बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व को दर्शाता है। शिक्षक का वेतन उन कारकों में से एक है जो शिक्षकों के प्रदर्शन और शिक्षक के प्रदर्शन को सीधे शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित करता है। इस प्रकार, वेतन और सेवाओं की शर्तों को समुदाय द्वारा साझा किया जा सकता है। शैक्षणिक पर्यवेक्षण और समर्थन में समुदाय की भूमिका। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली वह है जो अपने लक्ष्यों को पूरा करने में सफल होती है, जो बच्चों, समुदायों और समाज की जरूरतों के लिए प्रासंगिक है और यह बच्चों की ज्ञान और महत्वपूर्ण सीखने के कौशल हासिल करने की क्षमता को बढ़ावा देता है।

शिक्षा के लिए वैश्विक अभियान में कहा गया है कि स्कूल में उच्च ड्रॉपआउट दर न केवल खराब गुणवत्ता का परिणाम है, लेकिन अगर स्कूल में प्रभावी शिक्षा नहीं हो रही है, तो माता–पिता के बच्चों को स्कूल जल्दी वापस लेने या उन्हें बिल्कुल नहीं भेजने की अधिक संभावना है। इसलिए शिक्षा की सार्वभौमिक पहुंच के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आवश्यक है। स्कूल प्रबंधन में समुदाय की सक्रिय भागीदारी के बिना गुणवत्ता में सुधार संभव नहीं है। समुदाय में परियोजना कार्य विद्यालय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक अच्छे शैक्षणिक उपागम में से एक हो सकता है। समुदाय इस दृष्टिकोण की नींव है। छात्रों को समुदाय के लोगों के तथ्यों, भावनाओं और अनुभवों को प्रदान करना, परियोजना कार्य के दौरान छात्रों की गहरी समझ को बढ़ाने के लिए शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में सबसे अच्छी मदद हो सकती है।

समुदाय के लोग इस अर्थ में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक अभिनेता के रूप में खेल सकते हैं। सफल स्कूल छात्रों के समर्थन में संबंधों को मजबूत करने के तरीके के रूप में माता–पिता और समुदायों के साथ संबंध बनाते हैं, और छात्रों को बेहतर ढंग से समझने के तरीके के रूप में ताकि शिक्षण को उनके अनुरूप बनाया जा सके क्योंकि व्यक्तिगत समुदाय स्कूल के लिए मूल्यवान संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं और जिन परिवारों की वे सेवा करते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

Unit :– 5.5 Safeguarding children with disabilities and their families in the communities (समुदायों में विकलांग बच्चों और उनके परिवारों की सुरक्षा करना) – एक समूह के रूप में निःशक्त बच्चों में उनके गैर–विकलांग साथियों की तुलना में हिंसा का सामना करने का जोखिम लगभग चार गुना अधिक होता है। यह इस बात से संबंधित हो सकता है कि देखभाल कैसे प्रदान की जाती है, हानि का प्रभाव, साथ ही बच्चों, उनके परिवारों और संगठनों का समर्थन करने के लिए उपलब्ध कार्यक्रमों की दुर्लभता।

सुरक्षा रणनीतियों में विकलांग बच्चों के लिए सुरक्षात्मक व्यवहार की जानकारी और शिक्षा का प्रावधान, बच्चों की आवाज सुनने के महत्व को पहचानना, और अभ्यास दृष्टिकोण के एक समुदाय को गले लगाना शामिल है।

निःशक्तता – समावेशी बाल सुरक्षा जागरूकता – कम से कम वृद्धि में शामिल होना चाहिए।

- एक सामान्य समझ स्थापित करना।
- विकलांगता अधिकार (यूएनसीआरपीडी और यूएनसीआरसी ढांचे का उपयोग करके), मिथकों को दूर करना और कलंक को कम करना।
- विकलांग बच्चों के लिए विशिष्ट दुर्व्यवहार और जोखिम।
- विकलांग बच्चों के लिए दुर्व्यवहार के संकेत।
- विकलांग बच्चों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विचार।
- हानिकारक भाषा के जोखिम।

विकलांग बच्चों की सुरक्षा का सबसे अच्छा तरीका उन्हें उनके अधिकारों के बारे में सूचित करना है। यदि एक बच्चे को उनके संरक्षण के अधिकार के बारे में शिक्षित किया जा सकता है, तो वे दुर्व्यवहार की रिपोर्ट करने के लिए बेहतर रूप से सुसज्जित हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि विकलांग बच्चे अपने अधिकारों को समझते हैं और जानते हैं कि संगठनात्मक बाल सुरक्षा प्रणालियों से क्या उम्मीद की जानी चाहिए, संगठनों को योजना बनानी चाहिए और बजट पर विचार करना चाहिए।

- विकलांग बच्चों को उनके अधिकारों के बारे में प्रशिक्षण देना।
- पीयर–टू–पीयर सपोर्ट और चाइल्ड लीड लर्निंग सेशन की स्थापना और चलाना, जैसे कि समावेशी चाइल्ड राइट्स क्लब।
- सुरक्षा प्रक्रियाओं के डिजाइन के दौरान विकलांग बच्चों के साथ परामर्श सत्र। ये विकलांग और बिना विकलांग बच्चों के मिश्रित समूहों में हो सकते हैं जहां ऐसा करना सुरक्षित है।
- विकलांग बच्चे अपने द्वारा अनुभव किए जाने वाले नुकसान की रिपोर्ट कैसे कर सकते हैं, इस पर समावेशी जानकारीय बाल–नेतृत्व वाले हितधारक प्रशिक्षण सत्र जो विकलांग बच्चों को चिकित्सकों के साथ बेहतर सुरक्षा संरचनाओं के लिए आत्म–अधिवक्ता करने में सक्षम बनाते हैं।
- अधिकार–आधारित सामग्री ब्रेल, बड़े प्रिंट, सॉफ्ट–कॉपी और बच्चों के अनुकूल संस्करणों सहित बच्चों के अनुकूल, उदाहरण और सुलभ स्वरूपों में होनी चाहिए।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow

विकलांग बच्चों की देखभाल करने वाले परिवारों को गहन और मांग वाली चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, कभी–कभी आजीवन, देखभाल। उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ सकता है और सामाजिक आर्थिक कठिनाइयों का खतरा भी बढ़ सकता है। जबकि गंभीर कठिनाइयों वाले बच्चों को संस्थानों में रखा गया था, अधिकांश परिवारों को अपने स्वयं के संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता था और परिवार के अन्य सदस्यों की सहायता से (या अक्सर बिना) बच्चे की स्थायी देखभाल प्रदान करनी पड़ती थी। चाइल्डकैअर के लिए योग्य व्यक्तियों को खोजना मुश्किल था, और उन परिवारों में से अधिकांश के लिए यह बहुत महंगा था। यही वजह है कि मांओं को अक्सर अपने बच्चे की देखभाल के लिए अपना काम छोड़कर घर पर ही रहना पड़ता है। चाइल्डकैअर के लिए बढ़ा हुआ खर्च और आय में कमी क्योंकि एक या दोनों माता–पिता बेरोजगार हैं, उन परिवारों को गरीबी में रखते रहे हैं।

उनके लिए एक और कठिनाई उन बच्चों को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने की बहुत धीमी प्रक्रिया है। विधायी नियम विकलांग बच्चों को पब्लिक स्कूलों में दाखिला दिलाने का समर्थन करते हैं, लेकिन उस प्रक्रिया का बहुत विरोध हुआ। शिक्षक या यहां तक कि माता–पिता भी इस तरह के बदलावों को अपनाने के लिए तैयार नहीं थे। जिन शिक्षकों को प्रशिक्षित नहीं किया जाता है उनके पास उन बच्चों से निपटने के लिए विशेष कौशल और ज्ञान की कमी होती है। अन्य बच्चों की जरूरतों और शैक्षिक कार्यक्रमों के अनुरोधों के साथ अपनी आवश्यकताओं के सामंजस्य के लिए संघर्ष करते हुए, शिक्षक अतिरिक्त बोझ का अनुभव करते हैं और अक्सर बेकार प्रयास के कारण जलते हुए महसूस करते हैं। माता–पिता आमतौर पर अपने साथियों की तुलना में बच्चों की सामाजिक अस्वीकृति और विफलता से डरते हैं।

UP066-Usha Charitable Trust, Lucknow